नवंबर, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 11

www.indiatibet.net

तिब्बत देश

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका

करुणा वर्ष

मूल्य :10 रु , वार्षिक : 100 रु

तिब्बत देश

नवंबर, 2025 , वर्ष : 46 अंक : 11

तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका पहली बार 1979 में प्रकाशित
तिब्बत के बारे में सही जानकारी के साथ हर महीने आपके हाथो में

प्रधान संपादक
ताशी देकि

सलाहकार संपादक
प्रो. श्यामनाथ मिश्र , डा. अतुल कुमार

प्रबंध संपादक
मिग्मार छमचो

वितरण प्रबंधक
नावांग छोडेंन

संपादकीय एवं प्रकाशन कार्यालय :
भारत तिब्बत समन्वय केन्द्र
एच -१० लाजपत नगर -३
नई दिल्ली -११००२४, भारत

तिब्बत देश में प्रकाशित विचरों से संपादक, प्रकाशक का सहमत होना अनिवार्य नहीं है।

इसमें प्रकाशित सामग्री का उपयोग अन्यत्र किया जा सकता है। कृपया तिब्बत देश का उल्लेख अवश्य करें ।

मुद्रक एवं प्रकाशक
जमयांग दोरजी द्वारा

नोरबू ग्राफ़िक्स , 1/6, बेसमेंट
विक्रम विहार , लाजपत नगर
नई दिल्ली - 110024

तिब्बत के बारे में नियमित जानकारी के लिए भारत - तिब्बत समन्वय केन्द्र की [illegible]

coordinator@indiatibet.net

: सिक्योंग पेनपा त्सेरिंग ने प्रतिदिन टाइम को इंटरव्यू दिया, असम में गुवाहाटी यूनिवर्सिटी और रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी को संबोधित किया

समाचार -

समाचार -

Contents

०१. मोन तवांग के भक्तों ने परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु प्रार्थना की 2
०२. सिक्योंग ने गुवाहाटी स्थित कॉटन यूनिवर्सिटी और प्रागज्योतिषपुर यूनिवर्सिटी के छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया 3
०३. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने प्रतिदिन टाइम को इंटरव्यू दिया, असम में गुवाहाटी यूनिवर्सिटी और रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी को संबोधित किया 4
०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का लखनऊ दौरा, मीडिया इंटरव्यू और वॉरियर्स डिफेंस एकेडमी में भाषण 4
०५. सिक्योंग का लखनऊ में तिब्बत जागरूकता वार्ता, लखनऊ विश्वविद्यालय और आईएमआरटी बिजनेस स्कूल के छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया 5
०६. कार्यवाहक सिक्योंग डोल्मा ग्यारी ने तिब्बत समर्थक के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की 7
०७. आंबेडकरवादियों के प्रतिनिधिमंडल ने डिप्टी स्पीकर के नेतृत्व वाली स्थायी समिति के सदस्यों से मुलाकात की 7
०८. नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी ने ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा को २०२५ का डेमोक्रेसी सर्विस मेडल दिया 8
०९. सीटीए ने परम पावन दलाई लामा के तिब्बत के आध्यात्मिक-लौकिक नेतृत्व संभालने की ७५वीं वर्षगांठ मनाई 8
१०. डीआईआईआर का तिब्बत जागरूकता कार्यकम जयपुर में सफलतापूर्वक संपन्न, १० शैक्षणिक संस्थानों के २,००० से अधिक छात्र शामिल हुए 9
११. शिक्षा विभाग ने नर्सिंग प्रोग्राम में एकेडमिक एक्सीलेंस के लिए गोल्ड मेडल से सम्मानित ग्यूरमे ल्हामो को बधाई दी 11
१२. लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में 'डेमोक्रेसी: ए गिफ्ट ऑफ हिज होलीनेस द दलाई लामा टू द तिब्बतन पीपुल' शीर्षक प्रर्दशनी का आयोजन 11
१४. भारतीय सांसद दोरजी शेरिंग लेपचा ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 12
१५. एस्टोनियाई प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया 13
१६. पुरूवाला तिब्बती सेटलमेंट द्वारा 'करुणा वर्ष' पर गर्म कपड़ों का वितरण 13
१७. खाम कथोक तिब्बती सेटलमेंट ने यमुना नदी के पास पोंटा साहिब में जरूरतमंद समुदायों में कपड़े बांटे 14
१८. जिनेवा स्थित तिब्बत कार्यालय द्वारा प्रतिनिधि थिनले चुक्की के नेतृत्व में उच्चस्तरीय राजनयिक और एडवोकेसी बैठकों की शृंखला आयोजित 14
१९. सांसदों और समर्थकों ने कांग्रेस की सुनवाई के दौरान तिब्बत के लिए मजबूत समर्थन की मांग की 15
२०. तिब्बती बौद्ध बीजिंग द्वारा 'थोपे व्यक्ति' को खारिज करेंगे 15
२१. गोन्नम, गोंत्से, जिग्मे तेनजिन, पाल्डेन, लोचो, नामग्याल, नोर्डे, कालसांग 16
२२. तिब्बती राजनीतिक कैदियों को जानें 16

अपनी बात

तिब्बती समाज में चुनावी जागरुकता अभियान से भारी उत्साह

प्रो0 श्यामनाथ मिश्र
श्री श्याम मंदिर, खेतड़ी
जिला–झुंझुनूं (राजस्थान)
मो.–9079352370
E-mail:- shyamnathji@gmail.com

परमपावन दलाई लामा के व्यक्तित्व–कृतित्व के प्रति निरंतर बढ़ती श्रद्धा–निष्ठा अत्यन्त प्रषंसनीय तथा अभिनंदनीय है। वे तिब्बती धार्मगुरु हैं लेकिन सम्पूर्ण विष्व के लिये प्रेरणा–स्रोत बने हुए हैं। वे बौद्ध उपासना–पद्धति से जुड़े हैं लेकिन अन्य सभी रिलिजन (पंथ, संप्रदाय, मत) के लोगों के लिये भी श्रद्धेय हैं। अब तो वे तिब्बत के राजप्रमुख भी नहीं हैं क्योंकि वे सन् 2011 से ही अपने समस्त राजनैतिक अधिकार निर्वासित तिब्बत सरकार को सौंप कर स्वयं को सिर्फ बौद्ध रिलिजन से संबंधित कार्यों तक सीमित कर चुके हैं। इसलिये एक प्रष्न बार–बार उठता है कि सिर्फ बौद्ध धर्मप्रमुख दला. ई लामा के प्रति विष्व स्तरीय आदरपूर्ण आकर्षण का कारण क्या है?

दलाई लामा के प्रति विष्वभर के लोगों में सम्मान का मुख्य कारण है उनका लोकतांत्रिक आचार–विचार–व्यवहार। इसी नवंबर 2025 में हिमाचल प्रदेष के कांगड़ा जिलांतर्गत धर्मषाला स्थित उनके मंदिर एवं निवास पर लोगों की भारी भीड़ उमड़ी। लोग उनके दर्षन और प्रवचन से स्वयं को भाग्यषाली समझ रहे थे। इनमें विभिन्न देषों के राजनेता, मीडियाकर्मी, विद्वान्, कलाकार, कई सरकारी एवं निजी संस्थानों के प्रमुख प्रतिनिधि, वैज्ञानिक तथा साहित्यकार शामिल थे। इनमें भी अच्छी संख्या युवापीढ़ी के प्रतिनिधियों की थी। ऐसा ही दृष्य पूरे वर्षभर देखने को मिलता है। लोग दलाई लामा के दर्षन एवं उपदेष से नई ऊर्जा प्राप्त करते हैं तथा वापस जाकर अपने क्षेत्र, व्यवसाय, कार्य और व्यवहार में शांति, अहिंसा, करुणा तथा सद्भाव जैसे मानवीय मूल्यों को मजबूत करते हैं। दलाई लामा के मतानुसार भारतीय ज्ञान–विज्ञान की प्राचीन नालंदा परंपरा, जो कि बौद्ध दर्षन पर आधारित है, में इन्हीं मानवीय मूल्यों को सर्वोच्च स्थान प्राप्त था। ये मानवीय मूल्य हर मजहब के अनुयायी तथा मजहब विरोधी व्यक्ति के लिये भी समान रूप से उपयोगी हैं। इन्हें अपनाकर ही ''सर्वे भवन्तु सुखिनः'' तथा ''वसुधैव कुटुम्बकम्'' के भारतीय संकल्प को साकार किया जा सकेगा।

समाज में लोकतांत्रिक मूल्यों के सषक्तिकरण की प्रक्रिया का श्रीगणेष दलाई लामा ने अपने घर अर्थात् तिब्बत से किया। उन्होंने स्पष्ट किया कि धर्मषाला से संचालित निर्वासित तिब्बत सरकार का भी निर्वाचन होना चाहिये। तिब्बती समाज में लोकतंत्र के सभी चार स्तम्भों–कार्यपालिका, विधानपालिका, न्यायपालिका तथा समाचा. रपालिका–पर निर्णायक नियंत्रण वयस्क मताधिकार द्वारा चुनावी प्रक्रिया से निर्वाचित जनप्रतिनिधियों का होना चाहिये। निर्वाचित जनप्रतिनिधि जनता के प्रति अपने कार्यों के लिये उत्तरदायी रहेंगे अर्थात् इन पर भी अंतिम निर्णय लेने का अधिकार तिब्बती मतदा. ताओं और जनता का होगा। खुषी की बात है कि दलाई लामा की लोकतांत्रिक योजनानुसार ही निर्वासित तिब्बत सरकार का निर्वाचन होता रहा है।

इस समय तिब्बती समाज नये निर्वाचन की प्रक्रिया के रंग में सराबोर है। तिब्बती मुख्य चुनाव आयुक्त एवं अन्य दोनों चुनाव आयुक्त विष्व के विभिन्न देषों में रहने वाले तिब्बतियों में निर्वाचन की प्रक्रिया तथा आदर्ष आचार संहिता के बारे में जागरुकता लाने के लिये प्रवास कर रहे हैं। वे उन्हें मताधिकार तथा इसके उपयोग के महत्व से परिचित कराते हैं। वे जनता तथा प्रत्याषियों के लिये आवष्यक चुनावी आचार संहिता के पालन की आवष्यकता के बारे में बताते हैं। तिब्बती चुनाव आयोग का मानना है कि निर्वाचन प्रक्रिया में तिब्बती समाज की अधिकाधिक रचनात्मक भागीदारी से लोकतंत्र भी अधिकाधिक सुदृढ़ होगा। इससे वर्ष 2026 के चुनाव तिब्बती जनता में लोकतांत्रिक मूल्यों को मजबूत करने में पहले से अधिक मददगार सिद्ध होंगे।

निर्वासित तिब्बत सरकार के वर्तमान सिक्योंग (राजप्रमुख–सरकार प्रमुख) पेंपा त्सेरिंग चुनावी व्यस्तताओं के बावजूद नवंबर, 2025 में भी प्रवास करते रहे। उन्होंने भारत–तिब्बत समन्वय केन्द्र तथा तिब्बत सपोर्ट ग्रुप के क्षेत्रीय संयोजन में असम एवं उत्तरप्रदेष के प्रवास किये। असम की गुवाहाटी में उनके द्वारा तवांग तीर्थयात्रा, जिसमें ढाई सौ से अधिक तीर्थयात्री शामिल थे, का उद्घाटन किया गया। भारत–तिब्बत सहयोग मंच द्वारा प्रतिवर्ष तवांग ती. र्थयात्रा का संचालन किया जाता है। इसमें वीरगतिप्राप्त भारतीय सैनिकों को श्रद्धांजलि दी जाती है और अवैध चीनी नियंत्रण से भारतीय भूभाग तथा पवित्र कैलाष मानसरोवर की मुक्ति के संकल्प को दोहराया जाता है। इसमें बताया जाता है कि स्वतंत्र तिब्बत देष पर सन् 1959 से जारी चीनी नियंत्रण अवैध है क्योंकि चीन की दीवार ही चीन की वास्तविक सीमा है। इसके बाहर सिर्फ अवैध आधिपत्य है। इसमें इस बार भी तिब्बत समस्या के शीघ्र समाधान पर जोर देते हुए तिब्बती संघर्ष को और अधिक व्यापक एवं व्यवस्थित करने का निर्णय लिया गया है।

सिक्योंग पेंपा त्सेरिंग ने असम एवं उत्तरप्रदेष में जनप्रतिनिधियों, मंत्रियों, सांसदों, विधायकों तथा मीडियाकर्मियों से मिलकर उन्हें तिब्बत में जारी चीनी अत्याचार की प्रामाणिक जानकारी दी है। उन्होंने विभिन्न षिक्षण संस्थानों एवं कई स्वयंसेवी संगठनों को भी बताया कि विष्वस्तर पर तिब्बती संघर्ष के पक्ष में सहयोग तथा समर्थन बढ़ता जा रहा है। साम्राज्यवादी चीन सरकार की अमानवीय, अलोकतांत्रिक, अवैध तथा साजिषपूर्ण तिब्बत नीति के फलस्वरूप तिब्बत की पहचान भी खतरे में है। तिब्बत में चीन ने ऐसी तिब्बती युवापीढ़ी तैयार कर ली है जो पूर्णतः चीन समर्थक तथा तिब्बत विरोधी है। भारत में भी विदेषी आक्रमणकारियों ने एक ऐसा वर्ग तैयार कर लिया था। उस वर्ग के लोग ही भारत को इंडिया कहते हैं तथा अनेक भारतीय स्थलों, प्रतीकों, कलाओं, उत्सवों आदि के पारंपरिक नाम रखने के विरोधी हैं। वे अपने घर–परिवार में भी आक्रमणकारियों के नाम रखते हैं तथा उनका महिमामंडन करते हैं। इन उदाहरणों से तिब्बती पहचान मिटाने की चीनी साजिष को आसानी से समझा जा सकता है।

◆ ०१. मोन तवांग के भक्तों ने परम पावन दलाई लामा की दीर्घायु प्रार्थना की

१२ नवंबर, २०२५

धर्मशाला। यहां के मुख्य तिब्बती मंदिर- थेकचेन चोलिंग सुगलागखांग के प्रांगण को ११ नवंबर २०२५ को फूल-मालाओं से सजाया गया था। परम पावन दलाई लामा के आवास द्वार से लेकर मंदिर के नीचे बरामदा में विराजमान उनके सिंहासन तक शुभ प्रतीक-चिह्नों और फूलों की पंखुड़ियों से सजा एक लाल कालीन बिछा था और पारंपरिक मोनपा वेशभूषा में लगभग ५५० लोग आंगन में बैठे थे।

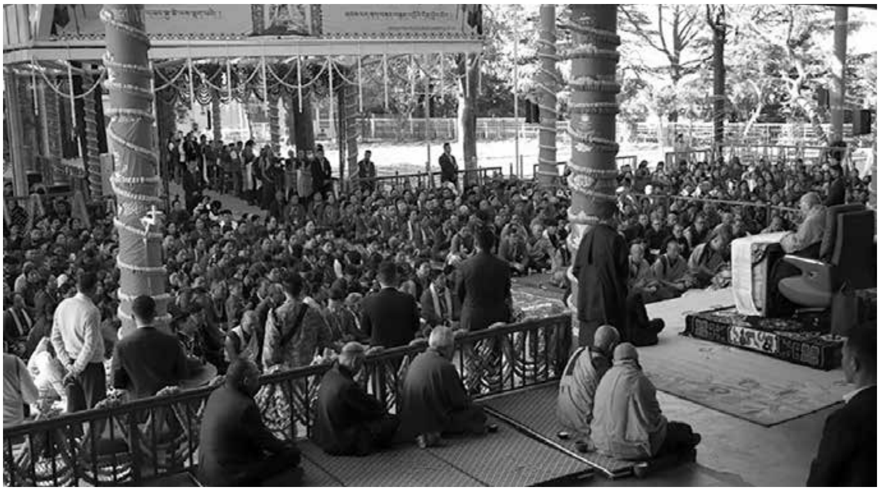

जब परम पावन द्वार पर पहुंचे, तो आयोजनकर्ताओं में शामिल- ऑल मोनपा स्टूडेंट्स यूनियन और लामा न्गवांग नोरबू- के नेतृत्व में मोनयुल के युवाओं के प्रतिनिधियों ने उनका स्वागत किया। फिर वे मुस्कुराते हुए और शुभचिंतकों को हाथ हिलाते हुए गलियारे के शुरू में फूलों के मेहराब से आंगन के बीच तक गए। उधर, भीड़ ने उनके स्वागत में धीरे-धीरे गाना गाया।

जब परम पावन आसन पर विराजमान हो गए, तो चाय परोसी गई। सोलह अर्हतों के आह्वान के आधार पर उनकी दीघायु प्रार्थना की गई। परम पावन को 'सोग' दिया गया, उन्होंने एक हिस्सा लिया और खाया। फिर मंत्र-गुरु ने उनकी दीर्घायु के लिए प्रार्थना करते हुए एक मंडल अर्पित किया। तवांग में तेंधोन कल्चरल प्रिजर्वेशन सोसाइटी के अध्यक्ष लामा न्गवांग नोरबू ने भी बुद्ध के मन, वचन और कर्म के तीन रूपों वाला एक मंडल अर्पित किया।

जब उनके दो शिक्षकों ने 'परम पावन दलाई लामा की लंबी उम्र के लिए व्यापक प्रार्थना वाला अमरता का गीत' गा लिया, तब आयोजन के सदस्य परम पावन के पास उनका आशीर्वाद लेने के लिए पहुंचे। इसके बाद लोगों का जुलूस वहां से प्रसाद लेते हुए गुजरा।

परम पावन ने सभा को संबोधित करते हुए कहा:

'मुझे पूर्व के दलाई लामाओं का अवतार माना गया है। मैंने ज्यादातर लिंग रिनपोछे और दूसरे आचार्यों के सानिध्य में अपनी पढ़ाई की है। मुश्किल हालात में मैं भारत आया। तब से मैं दुनिया भर के कई अलग-अलग देशों में गया हूं और लोग मुझे देखकर खुश होते हैं। मेरा जन्म अमदो में हुआ था और मैंने अपना ज्यादातर समय ज्ञान प्राप्त करने और समझदार लोगों को फायदा पहुंचाने की कोशिश में बिताया है। मुझे तिब्बत के ज्ञान और लोगों की चिंता है। जब से मैं भारत आया हूं, चीजें ऐसी ही रही हैं। मैं भारत में बोधगया जैसी पवित्र जगहों पर जाता हूं और मैं तिब्बत से आने वाले बौद्ध लोगों को फायदा पहुंचा पाता हूं। मुझे लगता है कि आखिरकार मैं चीन में भी बौद्ध लोगों को फायदा पहुंचा पाऊंगा।

'मेरी उम्र काफी हो गई है, लेकिन मेरी सेहत अच्छी है, इसलिए मैं बुद्ध वचनों का उपदेश दे पा रहा हूं। मुझे बौद्ध धर्म और उसमें विश्वास रखने वालों की सेवा करने का मौका मिला है।

'जब मैंने नोरबुलिंगका छोड़ा, तो मैंने प्रवचनों और सभी जीवों की भलाई के लिए, खासकर तिब्बत के लोगों के लिए प्रार्थना की। जब हम सांगपो नदी पार कर रहे थे तो मुझे दुख हुआ, लेकिन नाव वालों ने मुझे सांत्वना दी। उन्होंने मुझसे कहा- 'भले ही आपको अभी ल्हासा छोड़ना पड़े, दुखी मत होइए। आप कहीं भी रहें, तिब्बत की धार्मिक और राजनीतिक भलाई के लिए आपके अच्छे काम बेकार नहीं जाएंगे।' वे कितने दयालु थे? मेरा मन शांत हुआ और आखिरकार मैं भारत पहुंच गया। उसके बाद मैंने देश के कई हिस्सों के साथ-साथ दुनिया के कई देशों का भी दौरा किया और मैंने हमेशा एक शुद्ध भावना बनाए रखी। मैं शारीरिक रूप से जो कुछ भी कर सकता था, एक लक्ष्य वाली शुद्ध भावना बनाए रखते हुए वह मैंने किया। मैं उससे कभी नहीं डिगा। हालांकि, मुझे शारीरिक कठिनाइयों का सामना करना पड़ा, मैंने हमेशा कोशिश की और जो चुनौतियां मेरे सामने आईं, उनका साहस के साथ सामना किया।

'मेरी यात्राओं के कारण मेरा नाम काफी मशहूर हो गया है। मैं लोगों को समझा कर बौद्ध उपदेश देता हूं और उससे कई लोगों की थोड़ी-बहुत मदद भी हुई है। मैंने कड़ी मेहनत की है और मैं ऐसा करना जारी रखूंगा। जब मैं पहली बार भारत आया, तो लोग मुझे देखकर खुश हुए। उनका यह भाव अब तक नहीं बदला है। अब मैं जहां भी जाता हूं, लोग मुझे देखकर खुश होते हैं।

'आप लोग मोन-तवांग से यहां आए हैं और मेरी लंबी उम्र के लिए सच्ची प्रार्थनाएं की हैं, साथ ही चेनरेजिग से भी अनुरोध किए हैं। आपने ये प्रार्थनाएं मुझ पर अपना विश्वास और भरोसा रखने के प्रतीक के रूप में की हैं।

'सुबह उठने से लेकर रात को सोने तक, यहां तक कि सोते समय भी मैं यह प्रार्थना करता हूं, 'जो लोग मुझ पर विश्वास करते हैं, उन पर बुद्ध का आशीर्वाद बना रहे।' इस प्रकार, मैं सभी जीवों और उपदेशों के लाभ दिलाने के लिए लगातार प्रार्थना करता हूं।

'आप आज यहां आस्था से प्रेरित होकर इकट्ठा हुए हैं और मैं आपको धन्यवाद देता हूं। इन प्रार्थनाओं के अलावा जो हम कर रहे हैं, मैं चेनरेजिग, मंजुश्री और आर्य तारा के मंत्रों का जाप करूंगा।'

परम पावन ने सबसे पहले चेनरेजिग की प्रार्थना इस प्रकार की- हे सुंदर शुद्ध सफेद शरीर वाले, आपमें कोई दोष नहीं है, आपके सिर पर पूरी तरह से प्रबुद्ध बुद्ध का मुकुट है, आप करुणा मन से सभी जीवों को देखते हैं। हे चेनरेजिग मैं आपको प्रणाम करता हूं।

चेनरेजिग के साथ तिब्बत और हिमालयी क्षेत्र के लोगों के बीच विशेष लगाव को देखते हुए परम पावन ने सभा से अपना अनुसरण करते हुए तीन बार 'ओम मणि पद्मे हूं' बोलने को कहा, फिर इस मंत्र का पूरा एक 'माला' जाप करने के लिए कहा।

इसके बाद परम पावन ने मंजुश्री की प्रार्थना इन शब्दों में की- हे मंजुश्री, आप युवती रूप में प्रकट होती हैं और ज्ञान की महान ज्योति जलाती हैं, जो दुनिया से अंधेरे को दूर करता है, मैं आपको प्रणाम करता हूं।

परम पावन ने आगे कहा, दूसरों के काम आने की हमारी शुद्ध प्रेरणा हो सकती है, 'लेकिन ज्ञानयुक्त विवेक के बिना हम वास्तव में नहीं जान पाएंगे कि क्या मदद करने योग्य है और क्या नहीं। ज्ञानयुक्त विवेक हो, तो आप वास्तविकता के अर्थ का विश्लेषण कर सकते हैं। जब करुणा ज्ञान के साथ संयुक्त होती है, तो अपने लिए या दूसरों के लिए इससे बड़ा कुछ नहीं है।

'जहां तक मेरा अपना अनुभव है, मैं अपने मन की स्पष्टता का श्रेय मंजुश्री के मंत्र जाप को देता हूं। अब भी, जब बच्चे मेरे पास आते हैं, तो मैं उन्हें यह मंत्र सिखाता हूं। इसका जाप करने से हमें विश्लेषणात्मक, स्पष्ट, तेज, गहन और विवेचनात्मक ज्ञान मिलता है।' आखिर में, परम पावन ने कहा कि आर्य तारा, ज्ञान प्राप्त लोगों के नेक कामों और आठ प्रकार के भय से बचाव के मामले में किसी भी दूसरी देवी से अलग हैं। इसके साथ ही उन्होंने सभा में उपस्थित जन समुदाय से तीन बार इस मंत्र को दोहराने को कहा।

ऑल मोनपा स्टूडेंट्स यूनियन ने अपने अध्यक्ष की अगुवाई में परम पावन का अनुरोध स्वीकार करने और उनके लंबे जीवन के लिए आभार व्यक्त करते हुए एक धन्यवाद मंडल अर्पित किया। इसके बाद एक ही श्लोक में उनके लंबे जीवन के लिए प्रार्थना और 'सत्य के शब्दों की प्रार्थना' की गई।

जब सभा में मौजूद सभी लोग सिंहासन के पास जाकर परम पावन का आशीर्वाद ले रहे थे, तो कई गायकों ने भावुक होकर उनके लंबे जीवन की कामना करते हुए गीत गाए। परम पावन के अपने निवास पर लौटने के बाद भी, सभा में शामिल हुए लोग आंगन में रहकर खुशी से गाते रहे।

◆ ०२. सिक्योंग ने गुवाहाटी स्थित कॉटन यूनिवर्सिटी और प्रागज्योतिषपुर यूनिवर्सिटी के छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया

२१ नवंबर, २०२५

गुवाहाटी (असम)। असम के अपने कार्यकमों के दौरान सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २० नवंबर २०२५ को गुवाहाटी स्थित कॉटन यूनिवर्सिटी और प्रागज्योतिषपुर यूनिवर्सिटी का दौरा किया और वहां के छात्रों और शिक्षकों को तिब्बती पठार के भू-राजनीतिक और रणनीतिक महत्व और तिब्बत के अंदर तिब्बतियों के सामने आने वाली चुनौतियों के बारे में संबोधित किया।

कॉटन यूनिवर्सिटी में, सिक्योंग ने छात्रों और शिक्षकों के साथ एक सभा में शामिल होने से पहले कुलपति डॉ. रमेश चंद्र डेका से उनके कार्यालय में मुलाकात की।

यूनिवर्सिटी के रजिस्ट्रार डॉ. हिरेन डेका के स्वागत भाषण के बाद 'फ्री तिब्बत - ए वॉयस फ्रॉम असम' के संयोजक श्री सौम्यदीप दत्ता ने तिब्बत और भारत के बीच प्राचीन संबंधों विशेष रूप से, व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के माध्यम से अतीत में तिब्बत और असम के बीच संबंधों के बारे में बात की। कुलपति डॉ. रमेश चंद्र डेका ने अपने संबोधन में तिब्बती ज्योतिष के प्रति अपनी गहरी प्रशंसा व्यक्त की।

कार्यकम के तहत एक शैक्षणिक सभा में लगभग २०० लोगों की उपस्थिति में सिक्योंग ने अपना मुख्य भाषण दिया।

बाद में उसी दोपहर, सिक्योंग ने प्रागज्योतिषपुर यूनिवर्सिटी का दौरा किया, जहां यूनिवर्सिटी के कुलपति प्रो. स्मृति कुमार सिन्हा और रजिस्ट्रार जोगेश काकती ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया।

छात्रों और शिक्षकों के साथ बातचीत सत्र के दौरान कुलपति ने सिक्योंग का स्वागत किया और इतिहास में तिब्बत-असम संबंधों के साथ-साथ परम पावन दलाई लामा की निर्वासन यात्रा के बाद तेजपुर में उनके पहले बड़े पड़ाव के बारे में बात की। इस घटना की चर्चा से सिक्योंग के भाषण के लिए माहौल बना। रजिस्ट्रार जोगेश काकती ने यूनिवर्सिटी का परिचय और सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का संक्षिप्त परिचय दिया।

दोनों विश्वविद्यालयों में अपने संबोधनों में सिक्योंग ने तिब्बती इतिहास, संस्कृति और तिब्बत की वर्तमान स्थिति पर व्यापक प्रस्तुति दी। उन्होंने समझाया कि तिब्बती लिपि भारतीय गुप्तकालीन शारदा लिपि से विकसित हुई है और भारत की प्राचीन नालंदा परंपरा की बौद्ध शिक्षाओं को संरक्षित करने में तिब्बत की लंबे समय से चली आ रही भूमिका प्रमुख रही है। उन्होंने कहा कि ये सांस्कृतिक परंपराएं प्राचीन भारतीय ज्ञान के एक महत्वपूर्ण भंडार के रूप में काम करती रहती हैं। सिक्योंग ने यह भी बताया कि तिब्बत उन बड़ी नदियों का उद्गम स्थल है, जो पूरे एशिया में लगभग दो अरब लोगों को पेयजल उपलब्ध कराती हैं। इस संदर्भ में, उन्होंने तिब्बत में बड़े पैमाने पर बांध बनाने की चीनी परियोजनाओं पर चिंता जताई और चेतावनी दी कि इन बदलावों का निचले इलाके के देशों पर लंबे समय तक दुष्प्रभाव पड़ सकता है।

ऐतिहासिक प्रमुख घटनाओं की समीक्षा करते हुए सिक्योंग ने कहा कि चीनी सरकार द्वारा तिब्बत पर कब्ज़े के बाद, परम पावन दलाई लामा ने १७ नवंबर १९५० को आपातकालीन हालात में तिब्बत का आध्यात्मिक और लौकिक नेतृत्व संभाला। इस घटना की इस साल ७५वीं वर्षगांठ है। उन्होंने सत्रह-सूत्री समझौते, चीनी सरकार के साथ शांतिपूर्ण बातचीत करने के लिए परम पावन दलाई लामा के प्रयासों और आखिर में परम पावन और हजारों तिब्बतियों के भारत में निर्वासन में जाने पर चर्चा की। इसके बाद सिक्योंग ने संक्षेप में निर्वासित तिब्बती प्रशासन के गठन, परम पावन के मार्गदर्शन में तिब्बती लोकतांत्रिक संस्थानों के विकास और तिब्बती बस्तियों की स्थापना के बारे में बताया। उन्होंने भारत सरकार और लोगों का उनके लंबे समय से मिल रहे समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया और कहा कि यह तिब्बती समुदाय के अस्तित्व के लिए बहुत जरूरी था।

सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बती संघर्ष अहिंसा और शांतिपूर्ण समाधानों पर आधारित है। उन्होंने तिब्बतियों द्वारा किए गए आत्मदाह का भी जिक किया, जिन्हें वे तिब्बती धर्म, संस्कृति और पहचान को प्रभावित करने वाली चीनी नीतियों के खिलाफ विरोध के रूप में देखते हैं।

तिब्बत के अंदर मौजूदा हालात पर चर्चा करते हुए सिक्योंग ने कहा कि तिब्बती बच्चों को तेज़ी से सरकारी बोर्डिंग स्कूलों में भेजा जा रहा है, जहां पढ़ाई की मुख्य भाषा चीनी है। इसका जिक करते हुए उन्होंने जोर दिया कि यह तिब्बती भाषा और संस्कृति के संरक्षण के लिए खतरा है। उन्होंने आगे कहा कि तिब्बती बौद्ध संस्थानों के चीनीकरण के उद्देश्य से बनाई गई नीतियों के तहत बढ़ते दबाव का सामना करना पड़ रहा है और परम पावन १४वें दलाई लामा के अगले जन्म के रूप में पहचान के चयन में चीनी सरकार के अवैध हस्तक्षेप को व्यापक रूप से राजनीति से प्रेरित माना जाता है।

क्योंग ने आगे कहा कि दुनिया भर में पीआरसी का व्यापक राजनीतिक और आर्थिक प्रभाव है और बताया कि कैसे चीनी सरकार के व्यापारिक संबंध और बढ़ती अंतरराष्ट्रीय पहुंच भू-राजनीतिक गतिशीलता को आकार देती है।

संबोधन के बाद सिक्योंग ने उपस्थित छात्रों और कर्मचारियों के सवालों के जवाब दिए।

सिक्योंग की इन यात्राओं के दौरान उनके साथ श्री सौम्यदीप दत्ता, फ्री तिब्बत: ए वॉयस फ्रॉम असम की गुवाहाटी समन्वयक श्रीमती नोवनिता शर्मा और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली की समन्वयक ताशी देकि उपस्थित थीं।

◆ ०३. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने प्रतिदिन टाइम को इंटरव्यू दिया, असम में गुवाहाटी यूनिवर्सिटी और रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी को संबोधित किया

२४ नवंबर, २०२५

गुवाहाटी (असम)। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २१ नवंबर २०२५ को असम के एक प्रमुख न्यूज चैनल 'प्रतिदिन टाइम' को एक इंटरव्यू दिया। इसके अलावा उन्होंने गुवाहाटी यूनिवर्सिटी और रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में तिब्बत और तिब्बतियों की ऐतिहासिक और वर्तमान स्थिति के बारे में चर्चा की।

'प्रतिदिन टाइम' की ओर से इंटरव्यू चैनल के कंसल्टेंट एडिटर मृणाल तालुकदार ने लिया। इसके बाद सिक्योंग ने अपने दिन भर के आधिकारिक कार्यक्रम के तहत सुबह गुवाहाटी यूनिवर्सिटी और दोपहर में रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी का दौरा किया।

गुवाहाटी यूनिवर्सिटी में वहां के कुलपति प्रोफेसर नानी गोपाल महंत और रजिस्ट्रार प्रोफेसर उत्पल शर्मा ने सिक्योंग का गर्मजोशी से स्वागत किया। वहां, उन्होंने छात्रों और शिक्षकों के सामने भाषण दिया।

बाद में उसी दोपहर, रॉयल ग्लोबल यूनिवर्सिटी में इसी तरह का एक वार्तालाप सत्र आयोजित किया गया, जहां सिक्योंग और उनके सहयोगियों का रजिस्ट्रार डॉ. डिम्रता मुंशी और डॉ. डी.एन. सिंह ने गर्मजोशी से स्वागत किया। सिक्योंग ने यूनिवर्सिटी के एग्जिबिशन हॉल का दौरा किया, जहां उनके दौरे की याद में कैंपस में एक पौधा लगाया गया। इसके बाद, यूनिवर्सिटी ने सिक्योंग के सम्मान में दोपहर के भोजन का आयोजन किया।

छात्रों और शिक्षकों की सभा को संबोधित करने से पहले सिक्योंग ने यूनिवर्सिटी के आधिकारिक पॉडकास्ट के लिए एक रिकॉर्डेड इंटरव्यू भी दिया।

दोनों यूनिवर्सिटी में अपने भाषणों में, सिक्योंग ने बताया कि तिब्बत की अनोखी भौगोलिक स्थिति का लंबे समय से रणनीतिक और राजनीतिक महत्व रहा है। साथ ही उन्होंने पड़ोसी देशों में राजनीतिक घटनाक्रम को समझने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' नीति का परिचय दिया, जो परम पावन दलाई लामा की सोच से प्रेरित है। उन्होंने इस नीति की व्याख्या करते हुए समझाया कि इस दृष्टिकोण के माध्यम से चीन-तिब्बत संघर्ष का शांतिपूर्ण समाधान न केवल तिब्बतियों के हितों में रहेगा, बल्कि आसपास के सीमावर्ती देशों की स्थिरता और सुरक्षा में भी सकारात्मक योगदान देगा। तिब्बत के बारे में संक्षिप्त ऐतिहासिक अवलोकन प्रस्तुत करते हुए सिक्योंग ने तिब्बत के अतीत को उसके शुरुआती साम्राज्य काल के राजाओं से लेकर बिखराव की अवधि तक और फिर मंगोलों और युआन, मिंग और किंग राजवंशों के साथ पुजारी-संरक्षक संबंधों की तक कई सदियों की विकास यात्रा के बारे में बताया। उन्होंने बताया कि कैसे २०वीं सदी की शुरुआत में रिपब्लिक ऑफ चाइना और भारत के ब्रिटिश शासन के हमलों के कारण परम पावन १३वें दलाई लामा को दो बार निर्वासन में जाना पड़ा और कैसे १९१३ में चीन लौटने पर १३वें दलाई लामा ने तिब्बत की आजादी की फिर से पुष्टि की। अगले साल, यानी १९१४ में तिब्बत ने एक आजाद देश के तौर पर काम करते हुए ब्रिटिश भारत के साथ समझौता किया। इस समझौते के तहत ही तिब्बत और आज के अरुणाचल प्रदेश के बीच मैकमोहन रेखा को निश्चित किया गया। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि चीनी सरकार के तिब्बत के पुराने समय से चीन का अभिन्न अंग होने के दावे ऐतिहासिक रूप से गलत हैं।

छात्रों के मन में तिब्बत-चीन के जटिल रिश्ते की समझ को गहरा करने के लिए, सिक्योंग ने कुछ जरूरी किताबें पढ़ने की सलाह दी, जिसमें कानून के विद्वान माइकल वैन वॉल्ट वैन प्राग की 'तिब्बत ब्रीफ २०/२०' और प्रोफेसर लाओ की किताब शामिल है, जिनके मिंग और किंग समय के दस्तावेज पर शोध से यह सबूत मिलता है कि तिब्बत ऐतिहासिक रूप से चीन का हिस्सा नहीं था। उन्होंने छात्रों को और ज्यादा जानकारी के लिए इन शोध पुस्तकों को देखने के लिए प्रोत्साहित किया। परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के वैश्विक समारोहों की चर्चा करते हुए सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि कैसे परम पावन की अहिंसा और करुणा की शिक्षाएं तिब्बती समुदाय और पूरी दुनिया में गूंज रही हैं। परम पावन के ९०वीं वर्ष को 'करुणा वर्ष' के रूप में मनाया जा रहा है। उन्होंने आगे परम पावन की चार मुख्य प्रतिबद्धताओं के बारे में बताया। इनमें सार्वभौमिक मानवीय मूल्यों को बढ़ावा देना, धार्मिक सद्भाव को बढ़ावा देना, तिब्बत की संस्कृति और पर्यावरण का संरक्षण और प्राचीन भारतीय ज्ञान का पुनरुद्धार करना शामिल है।

सिक्योंग ने भारत और चीन के बीच ऐतिहासिक बफर स्टेट के रूप में तिब्बत की स्थायी रणनीतिक भूमिका पर भी जोर दिया। उन्होंने बताया कि तिब्बती भाषा दुनिया की पंद्रह सबसे पुरानी भाषाओं में से एक है, जिसकी अपनी लिपि है। यह लिपि भारत में विकसित हुई और एक महत्वपूर्ण सांस्कृतिक खजाना बनी हुई है। उन्होंने गेशे मोनलाम के उल्लेखनीय प्रयासों की प्रशंसा की, जिन्होंने तिब्बत के अंदर और बाहर के विद्वानों की मदद से २२३-खंडों का एक विशाल तिब्बती शब्दकोश तैयार किया है। फिर भी, सिक्योंग ने तिब्बत के अंदर तिब्बती भाषा और संस्कृति के चल रहे व्यवस्थित क्षरण के बारे में गहरी चिंता व्यक्त की।

इन यात्राओं के दौरान सिक्योंग के साथ चल रहे 'फ्री तिब्बत: ए वॉयस फ्रॉम असम' के संयोजक श्री सौम्यदीप दत्ता ने भी संबोधित किया और तिब्बत और भारत के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों, विशेष रूप से तिब्बत और असम के बीच ऐतिहासिक व्यापार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान पर प्रकाश डाला।

◆ ०४. सिक्योंग पेन्पा शेरिंग का लखनऊ दौरा, मीडिया इंटरव्यू और वॉरियर्स डिफेंस एकेडमी में भाषण

२५ नवंबर, २०२५

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)। गुवाहाटी में अपने आधिकारिक कार्यक्रमों को सफलतापूर्वक पूरा करने के बाद, सिक्योंग पेन्पा शेरिंग २२ नवंबर २०२५ की दोपहर लखनऊ पहुंचे, जहां उत्तराखंड और उत्तर प्रदेश के 'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज (सीजीटीसी)' के सदस्यों ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। इनमें सीजीटीसी के क्षेत्रीय संयोजक और भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) के अध्यक्ष डॉ. संजय शुक्ला, हिंदुस्थान समाचार के उत्तर प्रदेश राज्य ब्यूरो प्रमुख और पत्रकार दिलीप शुक्ला, देवरिया मेडिकल कॉलेज के निदेशक डॉ. राजेश बरनवाल और लखनऊ हाईकोर्ट के वकील शत्रुघ्न शाह शामिल थे।

अगले दिन लखनऊ में सिक्योंग ने कई मीडिया कार्यक्रमों में हिस्सा लिया, जिसमें उन्होंने प्रेस ट्रस्ट ऑफ इंडिया, हिंदुस्थान समाचार, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर, न्यूस्ट्रैक, संवाद लाइव, ईटीवी भारत, यूनिवार्ता/ यूनाइटेड न्यूज ऑफ इंडिया और रिपब्लिक न्यूज/आर. भारत न्यूज के मीडियाकर्मियों को इंटरव्यू दिया।

अपने व्यस्त कार्यक्रम के बीच सिक्योंग ने लखनऊ में वॉरियर्स डिफेंस एकेडमी का भी दौरा किया, जहां एकेडमी के चेयरमैन गुलाब सिंह, सेवानिवृत्त खुफिया अधिकारी और भारत-तिब्बत-चीन संबंधों के विशेषज्ञ ब्रिगेडियर राकेश भाटिया और अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद के आयोजन सचिव मेजर आनंद टंडन ने उनका स्वागत किया।

वहां संक्षिप्त स्वागत के बाद सिक्योंग ने मुख्य अतिथि के रूप में सभा को संबोधित किया, जिसमें उन्होंने तिब्बती मुद्दे के राजनीतिक महत्व और भारत के निरंतर समर्थन पर प्रकाश डाला। इस सभा में लगभग ६०० लोग उपस्थित थे, जिनमें एकेडमी के घनश्याम सिंह, जेपी सिंह, राधे श्याम सिंह जैसे अधिकारी और एनडीए और सीडीएस परीक्षाओं की तैयारी कर रहे छात्र शामिल थे।

इस कार्यक्रम का आयोजन 'कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज' के (उत्तर प्रदेश और उत्तराखंड) के क्षेत्रीय संयोजक और भारत-तिब्बत संवाद मंच के राष्ट्रीय अध्यक्ष संजय शुक्ला, तिब्बत समर्थक समूहप के मीडिया समन्वयक दिलीप शुक्ला और भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय की समन्वयक ताशी देकि ने किया था।

सभा की शुरुआत एकेडमी के चेयरमैन गुलाब सिंह द्वारा सिक्योंग पेन्पा शेरिंग के परिचय से हुई, जिन्होंने फिर एकेडमी और इसके मुख्य पाठ्यक्रमों का संक्षिप्त अवलोकन प्रस्तुत किया। इसके बाद डॉ. संजय शुक्ला, ब्रिगेडियर राकेश भाटिया और घनश्याम सिंह ने अपने-अपने वक्तव्यों में पूरे इतिहास काल के दौरान भारत और तिब्बत के बीच साझा सभ्यतागत, सांस्कृतिक और धार्मिक संबंधों पर जोर दिया। साथ ही पीएलए के हमले से पहले तिब्बत के एक स्वतंत्र राष्ट्र के तौर पर अस्तित्व में रहने के बारे में भी बताया।

छात्रों के बीच दिए अपने मुख्य भाषण में सिक्योंग ने पड़ोसी देशों की स्थिति को समझने के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि ये छात्र ही भविष्य में राष्ट्र के रक्षक बनेंगे। इसलिए, सिक्योंग ने अपने संबोधन में भू-राजनीति, पर्यावरणीय चिंताओं और सांस्कृतिक विरासत के मामले में तिब्बत के वैश्विक महत्व पर प्रकाश डाला।

तिब्बत की ऐतिहासिक और सांस्कृतिक विरासत पर विचार करते हुए सिक्योंग ने बताया कि तिब्बत का इतिहास हजारों साल पुराना है। आठवीं सदी के तिब्बती साम्राज्य के दौरान इसका शासन चीन में तांग राजवंश की राजधानी से लेकर पूर्वी तुर्किस्तान तक फैला हुआ था। राजा सोंगत्सेन गम्पो के शासनकाल में भारत के गुप्तकालीन शारदा लिपि के आधार पर तिब्बती लिपि विकसित की गई थी। उसी समय खेनचेन शांतरक्षित जैसे विद्वानों और सिद्ध तांत्रिक गुरु पद्मसंभव को भारत से आमंत्रित किया गया था, जिससे पूरे तिब्बत में नालंदा बौद्ध परंपरा के प्रसार में मदद मिली। संस्कृत के संपूर्ण बौद्ध धर्मग्रंथ का तिब्बती में अनुवाद किया गया और आज भी बौद्ध धर्म का अध्ययन तिब्बती भाषा के बिना पूरा नहीं किया जा सकता है। तिब्बती भाषा के चीनी भाषाओं की तुलना में भारतीय भाषाओं से अधिक गहरे संबंध हैं।

वर्तमान चुनौतियों पर प्रकाश डालते हुए सिक्योंग ने खुलासा किया कि पीआरसी सरकार तिब्बती भाषा, संस्कृति और पहचान को मिटाने की कोशिश कर रही है। बताया जा रहा है कि चार साल से कम उम्र के तिब्बती बच्चों को जबरन उनके परिवारों से अलग किया जा रहा है और उन्हें स्थायी आवासी स्कूलों में रखा जा रहा है और चीनीकरण की नीतियों को लागू किया जा रहा है।

पर्यावरण के मुद्दों पर सिक्योंग ने कई एशियाई देशों के लिए जल के उद्गम स्रोत के रूप में तिब्बत की महत्वपूर्ण भूमिका और दुनिया के तीसरे ध्रुव के रूप में इसकी पहचान पर जोर दिया। उन्होंने कहा कि क्षेत्र में बढ़ते तापमान के कारण ग्लेशियर पिघल रहे हैं, जिसका पड़ोसी देशों की जलवायु और वैश्विक पर्यावरण पर गंभीर परिणाम होगा।

तिब्बतियों के स्वतंत्रता और न्याय के संघर्ष पर चर्चा करते हुए सिक्योंग ने इस बात पर प्रकाश डाला कि यह भारत की प्राचीन संस्कृति से प्रेरित करुणा और अहिंसा के मार्ग का अनुसरण करता है और चीन के साथ बातचीत के माध्यम से इसका समाधान चाहता है। १९७३ से परम पावन दलाई लामा ने स्वतंत्रता की मांग नहीं की है, बल्कि 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' नीति को बढ़ावा दिया है, जिसे अंतरराष्ट्रीय राजनीतिक वास्तविकताओं और तिब्बती लोगों की परिस्थितियों के अनुरूप तैयार किया गया है। 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' तिब्बत की एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में ऐतिहासिक स्थिति को मान्यता देता है, जबकि पीआरसी द्वारा इसके वर्तमान कब्जे को भी उद्घाटित करता है। सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' में विश्वास बनाने के लिए तिब्बत को एक ऐतिहासिक रूप से स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में अंतरराष्ट्रीय मान्यता की आवश्यकता है।

सिक्योंग ने आगे 'रिजॉल्व तिब्बत ऐक्ट' के महत्व पर भी ध्यान दिया, जिसे २०२२ और २०२४ में अमेरिकी कांग्रेस द्वारा सर्वसम्मत प्रयासों से पारित किया गया था, जो तिब्बत को एक अनसुलझा अंतरराष्ट्रीय मुद्दा मानता है और इसकी ऐतिहासिक स्वतंत्रता की पुष्टि करता है। यह अंतरराष्ट्रीय स्तर पर इस तरह के कानून का पहला उदाहरण है और अन्य देशों में भी इसी तरह के उपाय शुरू करने के प्रयास जारी हैं। अपनी बात खत्म करते हुए, सिक्योंग ने नेशनल डिफेंस एकेडमी (एनडीए) की राष्ट्रीय परीक्षाओं में शानदार प्रदर्शन के लिए छात्रों- रवि गुप्ता और वत्सल गुप्ता को बधाई दी और पुरस्कृत किया।

◆ ०५. सिक्योंग का लखनऊ में तिब्बत जागरूकता वार्ता, लखनऊ विश्वविद्यालय और आईएमआरटी बिजनेस स्कूल के छात्रों और शिक्षकों को संबोधित किया

२५ नवंबर, २०२५

लखनऊ (उत्तर प्रदेश)। सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने २४ नवंबर २०२५ की सुबह तिब्बत पर एक 'टॉक सेशन' के लिए लखनऊ विश्वविद्यालय का दौरा किया। यह दौरा सीजीटीसी के क्षेत्रीय संयोजक और भारत-तिब्बत संवाद मंच (बीटीएसएम) के अध्यक्ष डॉ. संजय शुक्ला के प्रयासों से शुरू किया गया था और लखनऊ विश्वविद्यालय में राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर संजय गुप्ता द्वारा

आयोजित किया गया था।

विश्वविद्यालय पहुंचने पर, सिक्योंग का कार्यवाहक कुलपति प्रोफेसर अरविंद मोहन और प्रोफेसर संजय गुप्ता ने गर्मजोशी से स्वागत किया। 'टॉक सेशन' विश्वविद्यालय के असेंबली हॉल में प्रोफेसर अंचल श्रीवास्तव, संस्कृत विभाग की प्रमुख डॉ. जे. एस. यादव और २०० से अधिक शिक्षकों और छात्रों की उपस्थिति में आयोजित किया गया।

कार्यक्रम की शुरुआत सिक्योंग द्वारा पारंपरिक दीप प्रज्वलन समारोह से हुई। अपने स्वागत भाषण में प्रोफेसर संजय गुप्ता और प्रोफेसर अरविंद मोहन ने उन गहरे धार्मिक और सांस्कृतिक संबंधों के बारे में बात की, जिन्होंने हजारों सालों से भारत और तिब्बत को जोड़ा है। उन्होंने तिब्बत और तिब्बत के मुद्दे के राजनीतिक और ऐतिहासिक महत्व के बारे में भारतीय युवाओं में जागरूकता पैदा करने के महत्व पर जोर दिया।

सिक्योंग के दौरे के सम्मान में भाजपा नेता और शिया सेंट्रल वक्फ बोर्ड के पूर्व सदस्य श्री सैयद फैजी द्वारा दोपहर के भोजन का आयोजन किया गया था। इस दौरान, सिक्योंग ने मौलाना सूफियान निजामी, फोरसी इंडिया फाउंडेशन की चेयरपर्सन डॉ. आहुति बाजपेयी ओझा, बोधगया में यूपी क्रिकेट एसोसिएशन अंडर-१६ टीम के स्ट्रेंथ एंड कंडीशनिंग ट्रेनर श्री रजनीकांत, लखनऊ में भाजपा अल्पसंख्यक मोर्चा के नगर मंत्री श्री सैयद शाहब हैदर और अन्य स्थानीय नेताओं और समुदाय प्रतिनिधियों से मुलाकात की।

बाद में दोपहर में, सिक्योंग ने सद्भावना टीवी और सूचना इंडिया न्यूज को इंटरव्यू दिया, जिसके दौरान उन्होंने तिब्बत में राजनीतिक स्थिति, तिब्बती पठार पर पर्यावरणीय संकट और तिब्बतियों के लिए तिब्बत की अनूठी सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करने की तत्काल आवश्यकता के महत्व पर बात की। शाम ०५ बजे, वह आईएमआरटी बिजनेस स्कूल गए, जहां उनका स्वागत इसके चेयरमैन श्री देशराज बंसल ने किया। वहां उन्होंने पर्यावरण, सुरक्षा और शांति के विषय पर एक सभा को संबोधित किया।

विशेष अतिथि के तौर पर वरिष्ठ भाजपा नेता डॉ. नीरज सिंह, चेयरमैन बंसल, डायरेक्टर शिल्पिका पांडे, श्री पुष्कर शुक्ला (भाजपा लखनऊ के महासचिव), लखनऊ यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर बी.एन. मिश्रा, डिपार्टमेंट हेड यशस्वी भार्गव और ५० से ज्यादा शिक्षकों और छात्रों ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया।

कार्यक्रम की शुरुआत भारतीय सांस्कृतिक गीतों की प्रस्तुति से हुई, जिसके बाद वरिष्ठ शिक्षाविद डॉ. एम.के. झा ने स्वागत भाषण दिया। अपने संबोधन में डॉ. नीरज सिंह ने भारत और तिब्बत के बीच भाईचारे के रिश्ते के बारे में बात की और तिब्बत के न्यायपूर्ण मुद्दे का समर्थन करने की अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।

इसके बाद सिक्योंग ने अपना भाषण दिया, जिसमें उन्होंने तिब्बत के भू-राजनीतिक महत्व, इसके पर्यावरणीय महत्व और क्षेत्र में लंबे समय तक शांति और स्थिरता सुनिश्चित करने में इसकी भूमिका पर प्रकाश डाला। कार्यक्रम का समापन निदेशक शिल्पिका पांडे के धन्यवाद ज्ञापन के साथ हुआ।

दोनों संस्थानों में अपने भाषणों में सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत के मुद्दे की स्पष्ट समझ एक राष्ट्र के रूप में तिब्बत के ऐतिहासिक विकास की सही समझ से शुरू होती है। उन्होंने तिब्बत के इतिहास का एक संक्षिप्त विवरण दिया। इसमें मध्य एशिया में तिब्बती साम्राज्य स्थापित करने के शाही काल और उसके बाद के अराजकता के दौर तक का विवरण दिया, जिस दौरान तिब्बत ने एक केंद्रीय सत्ता के अभाव के बावजूद स्थिर सीमाओं को सुरक्षित बनाए रखा। उन्होंने आगे बताया कि गांडेन फोडरंग युग के दौरान, चीन और मंगोलिया के साथ तिब्बत के संबंध संरक्षक-पुजारी (चोस-योन) नीति पर आधारित थे और यह राजनीतिक पराधीनता नहीं थी। १९१४ के शिमला समझौते का हवाला देते हुए, जिसमें तिब्बत ने ब्रिटिश भारत के साथ एक स्वतंत्र राष्ट्र के रूप में भाग लिया था, सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत के तथाकथित 'अनादि काल से' चीन का अभिन्न हिस्सा होने के बारे में पीआरसी के दावे असल में इतिहास को तोड़-मरोड़ कर पेश किए गए हैं और अंतरराष्ट्रीय कानूनों के भी विपरीत हैं।

२०वीं सदी के घटनाक्रमों पर विचार करते हुए सिक्योंग ने बताया कि कैसे १९४९ में पीएलए के चामदो पर आक्रमण ने तिब्बत को संकट में डाल दिया और कैसे उस समय १५ वर्ष की आयु के परम पावन १४वें दलाई लामा ने १७ नवंबर १९५० को आध्यात्मिक और लौकिक दोनों नेतृत्व संभाला, जिसकी ७५वीं वर्षगांठ हाल ही में मनाई गई थी। उन्होंने कहा कि हालांकि परम पावन अब पश्चिमी कैलेंडर के अनुसार ९० वर्ष के हो गए हैं, तिब्बती लोग परम पावन के 'हिम्मत न हारने' के संदेश से शक्ति प्राप्त करते रहते हैं और संवाद और अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव के माध्यम से चीन-तिब्बत संघर्ष के शांतिपूर्ण समाधान के लिए प्रतिबद्ध हैं।

तिब्बत की सांस्कृतिक और धार्मिक विरासत का जिक्र करते हुए सिक्योंग ने इस बात पर जोर दिया कि भारत की प्राचीन नालंदा परंपरा से विरासत में मिले करुणा और अहिंसा के गहरे मूल्य आज की दुनिया में अपरिहार्य हैं। उन्होंने कहा कि तिब्बत की संस्कृति और बौद्ध विरासत का संरक्षण वैश्विक स्तर पर अधिक शांति और समझ को बढ़ावा देने में सीधे योगदान देता है। साथ ही, उन्होंने धार्मिक स्वतंत्रता, तिब्बती भाषा के अधिकारों और पर्यावरण संरक्षण पर पीआरसी द्वारा बढ़ाए जा रहे प्रतिबंधों पर गहरी चिंता व्यक्त की। उन्होंने परम पावन दलाई लामा के पुनर्जन्म को मान्यता देने की प्रक्रिया में बीजिंग के राजनीतिक हेरफेर के बारे में भी बात की और सात प्रमुख देशों द्वारा जारी हालिया संयुक्त बयान का स्वागत किया, जिसमें इस बात की पुष्टि की गई कि परम पावन के पुनर्जन्म को मान्यता देने का अधिकार पूरी तरह से तिब्बतियों के पास है।

अंत में, सिक्योंग ने तिब्बत के मुद्दे के लिए भारत सरकार और लोगों को उनके अटूट समर्थन के लिए गहरा आभार व्यक्त किया और इस लंबे समय से चली आ रही एकजुटता को जारी रखने की अपील की।

दिन भर के कार्यक्रमों का समन्वय श्री संजय शुक्ला ने किया, जिसमें भारत-तिब्बत समन्वय कार्यालय, नई दिल्ली की समन्वयक ताशी देकि और सिधौली से भाजपा के विधायक पद के उम्मीदवार रहे श्री रोहित भारती ने सहायता की।

◆ ०६. कार्यवाहक सिक्योंग डोल्मा ग्यारी ने तिब्बत समर्थक के प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की

१० नवंबर, २०२५

धर्मशाला, ०८ नवंबर २०२५। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की कार्यवाहक सिक्योंग और सुरक्षा विभाग की कलोन, डोल्मा ग्यारी ने धर्मशाला में तिब्बत समर्थक समूह के एक प्रतिनिधिमंडल से मुलाकात की। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व सीमा जागरण मंच, उत्तराखंड चैप्टर के जनसंपर्क प्रमुख श्री इंदरपाल सिंह कोहली, युवा फाउंडेशन के सदस्यों और भारत- तिब्बत संघ के राज्य अध्यक्ष ने किया।

प्रतिनिमंडल में कई प्रतिष्ठित सदस्य और गणमान्य व्यक्ति शामिल थे, ये हैं:

- रावल हरीश सेमवाल जी- श्री गंगोत्री धाम के मुख्य पुजारी और राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) के वरिष्ठ पदाधिकारी

- श्री भगवती जी- विभाग प्रचारक, धर्मशाला, आरएसएस

-श्री डी.पी.एस. रावत- आईटीबीपी के कमांडेंट (सेवानिवृत्त), सराहनीय सेवा के लिए राष्ट्रपति पुरस्कार और कई अन्य वीरता और सेवा पुरस्कारों के सम्मानित, भारत-तिब्बत सीमा के अनुभवी।

- श्री महेश पांडे- सदस्य, सीमा जागरण मंच और वरिष्ठ भाजपा नेता।

- श्री नवीन पिरशाली जी- सदस्य, सीमा जागरण मंच, उत्तराखंड में भाजपा प्रवक्ता और प्रमुख मीडिया हस्ती।

- श्री बलबीर सिंह जी- सदस्य, सीमा जागरण मंच और वरिष्ठ भाजपा नेता।

- श्री मोहन सिंह जी- आरएसएस पदाधिकारी।

- एडवोकेट कंचन सिंह रंगारह- सदस्य, सीमा जागरण मंच, प्रख्यात फोटोग्राफर, यात्री और टिहरी-गढ़वाल के प्रमुख रंगारह मालदार परिवार से।

-श्री राजिंदर सिंह गुंजियाल- सीबीआई के पूर्व अधिकारी और वर्तमान में एस.पी. (सलाहकार/परामर्शदाता), क्राइम ब्रांच, हरियाणा पुलिस।

- कर्नल अर्पित पारेख- गढ़वाल राइफल्स।

- श्री अभिषेक सिंह और श्री शुभम पंवार- सदस्य, सीमा जागरण मंच और उत्तराखंड के उत्तरकाशी जिले में भारत-तिब्बत सीमा पर वाइब्रेंट विलेजेज प्रोग्राम के वॉलंटियर्स।

-श्रीमती अतिशय जैन- सदस्य, सीमा जागरण मंच और टिहरी-गढ़वाल, उत्तराखंड के एक प्रमुख परिवार से।

बैठक के दौरान प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बती मुद्दे के प्रति अपनी निरंतर एकजुटता व्यक्त की और सीमावर्ती समुदायों, सुरक्षा सहयोग और भारतीय हिमालयी क्षेत्र और निर्वासित तिब्बतियों के बीच सांस्कृतिक आदान-प्रदान से संबंधित मुद्दों पर चर्चा की।

कार्यवाहक सिक्योंग ने सीमा जागरण मंच और भारत-तिब्बत संघ जैसे भारतीय दोस्तों और संगठनों द्वारा दिए गए अटूट समर्थन को स्वीकार किया और उसकी सराहना की। साथ ही भारत और तिब्बत के लोगों के बीच गहरे आध्यात्मिक और सांस्कृतिक संबंधों की पुष्टि की।

- सीटीए के सुरक्षा विभाग की रिपोर्ट

◆ ०७. आंबेडकरवादियों के प्रतिनिधिमंडल ने डिप्टी स्पीकर के नेतृत्व वाली स्थायी समिति के सदस्यों से मुलाकात की

०४ नवंबर, २०२५

धर्मशाला, ०३ नवंबर २०२५। श्री शिरीष रामटेके के नेतृत्व में आंबेडकरवादियों के एक प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और इसके संसदीय सचिवालय में डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग और स्थायी समिति के सदस्यों के साथ मुलाकात की।

दोनों पक्षों ने अपने बीच के बौद्ध धर्म से जुड़े विभिन्न मुद्दों पर चर्चा की, जिसके बाद प्रतिनिधिमंडल ने संसद भवन का दौरा किया। बैठक की शुरुआत परिचय के साथ हुई, जिसके दौरान दोनों प्रतिनिधिमंडलों के सदस्यों ने अपना- अपना परिचय दिया। अतिथि प्रतिनिधिमंडल के सदस्यों ने अपने पिछले और आगामी कार्यकमों और परियोजनाओं के साथ-साथ अपने लक्ष्यों और उद्देश्यों के बारे में बताया।

अपने संबोधन में डिप्टी स्पीकर तेखांग ने मेहमानों को पहले परम पावन दलाई लामा से मुलाकात करने पर बधाई दी और इसे एक सौभाग्यशाली आशीर्वाद और लंबे समय से चली आ रही आकांक्षा की पूर्ति बताया। उन्होंने श्री शिरीष रामटेके और उनके सहयोगियों को उनके गर्मजोशी भरे आतिथ्य और तिब्बती संसद की ओर से महाराष्ट्र राज्य में एडवोकेसी दौरे के दौरान प्रदेश की राजधानी मुंबई में तिब्बती संसदीय प्रतिनिधिमंडल को दी गई सहायता के लिए आभार व्यक्त किया।

डिप्टी स्पीकर ने आगे बौद्ध धर्म के सार पर प्रकाश डाला। उन्होंने आज की तेजी से नकारात्मक बन रही दुनिया में सकारात्मकता लाने, बिना किसी पूर्वाग्रह के समुदायों को एकजुट करने और सबसे महत्वपूर्ण बात, स्वयं और समाज की बेहतरी के लिए आंतरिक परिवर्तन को प्रेरित करने की इसकी क्षमता पर प्रकाश डाला।

निर्वासन में तिब्बती लोकतंत्र की सफलता और तिब्बत की विशिष्ट भाषा, संस्कृति और धर्म के पूर्ण संरक्षण का श्रेय परम पावन दलाई लामा की दूरदर्शी दृष्टि और आशीर्वाद को देते हुए उन्होंने तिब्बती स्कूलों, मठों और संस्थानों की स्थापना में तिब्बतियों की पुरानी पीढ़ी और भारत की अब तक गठित सरकारों के योगदान को भी स्वीकार किया।

चीन की दमनकारी नीतियों के तहत तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति पर बोलते हुए डिप्टी स्पीकर ने निर्वासित तिब्बती संसद के विकास, संरचना और कामकाज का पूरा ब्योरा प्रस्तुत किया।

अंत में, उन्होंने कहा कि केंद्रीय तिब्बती प्रशासन परम पावन दलाई लामा की ९०वीं जयंती को करुणा वर्ष के रूप में मना रहा है और उन्होंने आगंतुकों से उनके प्रेम और करुणा के संदेश को फैलाने और जब भी मौका आए, तिब्बत के समर्थन में बोलने का आग्रह किया।

इसके बाद मेहमानों को संसद भवन का दौरा कराया गया।

- तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

◆ ०८. नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी ने ११वें पंचेन लामा गेधुन चोएक्यी न्यिमा को २०२५ का डेमोक्रेसी सर्विस मेडल दिया

०५ नवंबर, २०२५

धर्मशाला। परम पवित्र ११वें पंचेन लामा जेट्सुन तेनजिन गेंदुन येशी ट्रिनले फुंट्सोक पाल सांग्पो (गेदुन चोएक्यी न्यिमा का औपचारिक नाम) को इस साल के 'डेमोक्रेसी सर्विस मेडल' से सम्मानित किया गया, जबकि वे अभी भी जबरन गायब रहने की स्थिति में हैं। यह पुरस्कार ११वें पंचेन लामा की ओर से निर्वासित ताशी ल्हुनपो मठ के मठाधीश ज़ीक्याब रिनपोछे ने प्राप्त किया। यह सम्मान तिब्बती लोगों के बाहरी हस्तक्षेप से मुक्त होकर अपने आध्यात्मिक नेताओं को चुनने के अधिकार की पुष्टि करता है, पीआरसी द्वारा मानवाधिकारों और धार्मिक स्वतंत्रता के लगातार उल्लंघन को उजागर करता है और ११वें पंचेन लामा के जबरन अपहरण के ३० साल पूरे होने पर गंभीरता के साथ उनकी याद दिलाता है।

११वें पंचेन लामा को यह प्रतिष्ठित पुरस्कार प्रदान करने के अवसर पर लिखे गए एक विशेष संदेश में परम पावन दलाई लामा ने इस सम्मान पर अपनी हार्दिक प्रसन्नता व्यक्त की। परम पावन ने लिखा, 'जैसा कि मैंने १९९५ में उनके चयन की घोषणा करते समय उल्लेख किया था, तिब्बत और निर्वासन दोनों जगह के तिब्बती लोगों ने, जिसमें ताशी ल्हुनपो मठ का नेतृत्व भी शामिल है, पंचेन लामा के पुनर्जन्म को पहचानने के लिए मुझ पर भरोसा किया था। इस प्रकार, जब पुनर्जन्म की खोज का समय आया, तो तिब्बत की राजनीतिक वास्तविकता को देखते हुए, मैंने चीनी सरकार के साथ मिलकर काम करने के लिए ईमानदारी से प्रयास किए।'

नौवें पंचेन लामा के साथ अपने विशेष व्यक्तिगत संबंध के साथ ही १०वें पंचेन लामा की विरासत को जारी रखने में ११वें पंचेन लामा की भूमिका को याद करते हुए परम पावन ने कहा, 'उनका (१०वें पंचेन लामा) जीवन बहुत कठिन था, लेकिन उन्होंने तिब्बत में तिब्बतियों के कल्याण को बढ़ावा देने के लिए हर अवसर का उपयोग किया, जिसमें उनके धर्म, संस्कृति और पहचान का संरक्षण भी शामिल है। मैंने १९९५ में उल्लेख किया था कि यह सुनिश्चित करने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए कि युवा अवतार का जीवन लंबा और सफल हो।' हालांकि, परम पावन ने गहरा दुख जताते हुए कहा, 'दुर्भाग्य से, बिना किसी गलती के, वह एक सामान्य व्यक्ति की तरह विकास और बढ़ोतरी का आनंद नहीं ले पाए हैं, चाहे बचपन में हो या अभी। हालांकि, मुझे सच्चाई की शक्ति पर विश्वास है और लंबे समय में सच्चाई ही जीतती है। इसलिए, मुझे उम्मीद है कि गेधुन चोएक्यी न्यिमा गरिमा और आजादी का जीवन जी पाएंगे।'

सम्मान समारोह के दौरान एबॉट ज़ीक्याब रिनपोछे ने टिप्पणी की, 'जैसा कि दुनिया भर के लोग समझते हैं, आस्था पवित्रता का क्षेत्र है। यह आजादी के लिए मौलिक है। इसे किसी राजनीतिक शक्ति द्वारा थोपा या नियंत्रित नहीं किया जा सकता। ...जब लोगों को अपने विश्वासों में अर्थ, गरिमा और अटूट संकल्प मिलता है, तो कोई जेल, कोई सेना और कोई शासन इसे बुझा नहीं सकता।'

इस समारोह की मेजबानी नेशनल एंडोमेंट फॉर डेमोक्रेसी (एनईडी) के अध्यक्ष डेमन विल्सन ने की और इसमें २०२४ के 'डेमोक्रेसी सर्विस मेडल' पाने वाले सिक्योंग पेन्पा शेरिंग और वाशिंगटन, डी.सी. स्थित तिब्बत कार्यालय के प्रतिनिधि नामग्याल चोएडुप भी शामिल हुए।

एनईडी एक स्वतंत्र, गैर-लाभकारी फाउंडेशन है, जो दुनिया भर में लोकतांत्रिक संस्थानों के विकास और मजबूती के लिए समर्पित है। १९८३ में अपनी स्थापना के बाद से यह एंडोमेंट हर जगह लोकतांत्रिक संघर्षों में सबसे आगे रहा है और एक बहुआयामी संस्थान के रूप में विकसित हुआ है, जो दुनिया भर में लोकतंत्र समर्थक कार्यकर्ताओं, साधकों और विद्वानों के लिए गतिविधि, संसाधन दाता और बौद्धिक आदान-प्रदान के केंद्र के रूप में काम करता है।

◆ ०९. सीटीए ने परम पावन दलाई लामा के तिब्बत के आध्यात्मिक-लौकिक नेतृत्व संभालने की ७५वीं वर्षगांठ मनाई

१७ नवंबर, २०२५

धर्मशाला। परम पावन महान १४वें दलाई लामा द्वारा तिब्बत के आध्यात्मिक और लौकिक नेतृत्व संभालने की ७५वीं वर्षगांठ मनाने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) की केंद्रीय घोटन आयोजन समिति ने १७ नवंबर की सुबह धर्मशाला के सुगलाखंग में एक समारोह आयोजित किया, जिसमें परम पावन के प्रति हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

परम पावन दलाई लामा की गरिमामयी उपस्थिति में आयोजित इस समारोह में भारत स्थित चेक राजदूत माननीय डॉ. एलिसका जिगोवा और भारत सरकार के विदेश मंत्रालय के आईएफएस संपर्क अधिकारी यशबीर सिंह भी उपस्थित थे। इस दौरान धर्मशाला में परम पावन की सेवा में तैनात रहे पूर्व संपर्क अधिकारी और डीएसपी भी मौजूद थे।

समारोह में तिब्बती मुख्य न्यायाधीश आयुक्त येशी वांगमो, स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और सिक्योंग पेन्पा शेरिंग ने कार्यक्रम शुरू करने के लिए प्रतीकात्मक रूप से बुद्ध के मन-वचन-काय के प्रतीक मंडल अर्पित किए। इसके बाद भारत और नेपाल में तिब्बती स्कूलों के पूर्व छात्रों की ओर से 'आभार कार्यकम आयोजन समिति' के अध्यक्ष और निर्वासित तिब्बती संसद के पूर्व सदस्य ताशी नामग्याल ने एक मंडल अर्पित किया। भारत में सात आवासीय केंद्रीय तिब्बती स्कूलों (सीएसटी), तिब्बती चिल्ड्रेंस विलेज (टीसीवी) स्कूल, तिब्बती होम्स फाउंडेशन (टीएचएफ) और भारत और नेपाल के विभिन्न तिब्बती डे स्कूलों के पूर्व छात्रों के

प्रतिनिधियों ने भी इस भेंट अर्पण कार्यक्रम में भाग लिया।

औपचारिक अर्पण कार्यक्रम के बाद सिक्योंग पेन्पा शेरिंग और स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल ने काशाग और निर्वासित तिब्बती संसद के बयान पढ़े। बयानों में १६ साल की उम्र से परम पावन द्वारा कुशल और विवेकपूर्ण नेतृत्व प्रदान करने पर प्रकाश डाला गया, जिसमें पीआरसी के तिब्बत में शुरुआती अतिक्रमण के दौरान आपसी सहमति खोजने और तिब्बत-चीन संघर्ष का समाधान करने के उनके प्रयासों से लेकर व्यावहारिक, दोनों पक्षों की जीत वाले मध्यम मार्ग दृष्टिकोण पेश करने तक की विवरण शामिल रहा। उन्होंने आम तिब्बतियों के कल्याण में सुधार के लिए उनकी पहलों और तिब्बत के सबसे बुरे समय के दौरान तिब्बती राजनीतिक प्रणाली का लोकतंत्रीकरण करने के उनके सुधारों का भी विस्तार से वर्णन किया। 'आभार कार्यक्रम आयोजन समिति (ग्रैटिट्यूड इवेंट ऑर्गेनाइजिंग कमेटी)' के अध्यक्ष ने शुरुआती भाषण दिया, जिसमें उन्होंने बताया कि भारी राजनीतिक जिम्मेदारियों के बावजूद, परम पावन ने युवा तिब्बती शरणार्थियों की शिक्षा को प्राथमिकता दी। इससे भारत सरकार के सहयोग से भारत और नेपाल में स्कूलों की स्थापना हुई। इन स्कूलों ने निर्वासन में रह रहे तिब्बतियों के बीच सार्वभौमिक शिक्षा का प्रसार किया, जिस कारण तिब्बतियों के बीच निरक्षरता न के बराबर है। निर्वासित तिब्बती समुदाय के स्नातक अब दुनिया भर के तिब्बती समुदाय और सभी समुदायों में महत्वपूर्ण योगदान दे रहे हैं।

इसके बाद, पूर्व तिब्बती सांसद ताशी नामग्याल, टीसीवी के अध्यक्ष सोनम सिचो और टीएचएफ के महासचिव मिगमार शेरिंग ने संयुक्त रूप से परम पावन को आभार व्यक्त करते हुए स्मृति चिन्ह अर्पित किए, जिसके बाद उनके करुणापूर्ण और दूरदर्शी नेतृत्व के लिए समर्पित एक आभार गीत प्रस्तुत किया गया।

समारोह में मुख्य अतिथि माननीया डॉ. एलिसका जिगोवा ने अपने मुख्य भाषण में समृद्धि और सद्भाव सुनिश्चित करने के लिए परिवारों, स्कूलों और राष्ट्रों में अच्छे नेतृत्व के महत्व पर जोर दिया। उन्होंने परम पावन के असाधारण नेतृत्व पर प्रकाश डालते हुए कहा, 'मैं युवा दलाई लामा के बारे में सोच रही थी, जो १९५० में सिर्फ १६ साल के थे और ऐसे कठिन हालात में अपने राष्ट्र और अपने लोगों की जिम्मेदारी ले रहे थे। नौ साल बाद वह हजारों लोगों के साथ निर्वासन में भारतीय सीमा पार कर गए। उस समय सभी छोटे बच्चों को नजरअंदाज जा सकता था, लेकिन ऐसा नहीं हुआ। सिर्फ २३ साल की उम्र में तिब्बत के आध्यात्मिक और लौकिक नेता ने १९६० में बच्चों के लिए स्कूल और घर बनाना शुरू किया। आज, हम उन सभी स्कूलों के पूर्व छात्रों और अभी भी वहां पढ़ रहे बच्चों को देखते हैं। यह सच में अद्भुत है।'

मसूरी में 'तिब्बती होम्स फाउंडेशन स्कूलों' की अपनी हाल की यात्रा को याद करते हुए, उन्होंने टिप्पणी की, 'छात्र न केवल अच्छी तरह से शिक्षित है, बल्कि उनकी बहुत अच्छी देखभाल भी की जाती है। वे सभी धाराप्रवाह तिब्बती बोलते हैं।' उन्होंने परम पावन के लंबे जीवन के लिए प्रार्थना करते हुए और तिब्बती समुदाय को अपनी शुभकामनाएं देते हुए अपना भाषण समाप्त किया।

समारोह के दौरान, पूर्व छात्रों ने १९५९ से परम पावन दलाई लामा और तिब्बती लोगों को भारत के अटूट समर्थन की सराहना में भारत के लोगों और सरकार के प्रति एक पट्टिका भी भेंट की। यह पट्टिका परम पावन के माध्यम से सरकार की ओर से संपर्क अधिकारी यशबीर सिंह ने स्वीकार की।

इस समारोह के दौरान परम पावन दलाई लामा के सचिव लोबसांग जिनपा द्वारा लिखी गई और सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग द्वारा प्रकाशित एक पुस्तक का विमोचन किया गया। परम पावन के अपने निवास पर लौटने के बाद आभार कार्यक्रम में भाग लेने वाले विभिन्न तिब्बती स्कूलों के छात्रों ने सभा के समक्ष शानदार सांस्कृतिक कार्यक्रम पेश किए, जिससे यह उत्सव खुशनुमा बन गया और इसी तरह इसका समापन हुआ।

◆ १०. डीआईआईआर का तिब्बत जागरूकता कार्यक्रम जयपुर में सफलतापूर्वक संपन्न, १० शैक्षणिक संस्थानों के २,००० से अधिक छात्र शामिल हुए

१८ नवंबर, २०२५

जयपुर, १५ नवंबर २०२५। केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के सूचना और अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग (डीआईआईआर) का जयपुर में एक सप्ताह तक चलने वाले तिब्बत जागरूकता भाषण दौरा सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें १० से १५ नवंबर २०२५ के बीच १० शैक्षणिक संस्थानों के २,००० से अधिक छात्रों और शिक्षकों ने हिस्सा लिया।

डीआईआईआर के 'तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन' द्वारा आयोजित तिब्बत जागरूकता कार्यक्रम में तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन के तेनजिन कुंखेन और रिनचेन ने प्रस्तुतियां दीं। वक्ताओं ने महत्वपूर्ण विषयों पर बात की, जिसमें तिब्बत क्यों मायने रखता है, भारत-तिब्बत संबंध और तिब्बत के अंदर की वर्तमान स्थिति शामिल है। छात्रों की समझ को बेहतर बनाने के लिए तस्वीरों के साथ मल्टीमीडिया प्रस्तुतियों का उपयोग किया गया।

वक्ताओं ने प्रत्येक संस्थान के पुस्तकालय को आवश्यक पठन सामग्री प्रदान की, जिसमें 'वॉयस फॉर द वॉयसलेस, इंडिया-तिब्बत रिलेशन, स्टोलेन चाइल्ड ऑफ तिब्बत- रिमेंम्बरिंग द स्टोरी ऑफ पंचेन गेधुन चोएक्यी न्यिमा (अंग्रेजी और हिंदी में) और ह्यूमन राइट वॉयलेशन- द केस ऑफ तिब्बत पुस्तकें शामिल थीं। कार्यक्रम का समन्वय भारत-तिब्बत संघ जयपुर के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री ओ.पी. त्रिपाठी की सहायता से किया गया, जो पूरे कार्यक्रम के दौरान वक्ताओं के साथ रहे।

रिनचेन ने भारत और तिब्बत के बीच गहरे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों पर एक विहंगम दृष्टि डाली और समझाया कि दोनों देशों के बीच संबंधों की सबसे महत्वपूर्ण कड़ी छवीं शताब्दी ईस्वी के आसपास भारत से तिब्बत में बौद्ध धर्म के प्रसार के रूप में जुड़ा है। उन्होंने प्राचीन व्यापार मार्गों का वर्णन किया, जिनके माध्यम से सांस्कृतिक आदान-प्रदान सुविधाजनक बनी, साझा परंपराएं बनी रहीं, जिसमें भारतीय गुप्तकालीन शारदा लिपि से प्रेरित तिब्बती लिपि का विकास और तिब्बती चिकित्सा पद्धतियों पर भारतीय आयुर्वेद का प्रभाव शामिल है। उन्होंने सिंधु नदी के महत्वपूर्ण भौगोलिक जुड़ाव का उल्लेख किया, जो तिब्बती पठार से निकलती है और भारत से होकर बहती है। इसके साथ ही उन्होंने भारतीय नेताओं द्वारा लगातार तिब्बत मुद्दे के समर्थन जोरदार तरीके से इंगित किया, जिन्होंने वर्षों से चीन द्वारा तिब्बत पर कब्जे की निंदा की है। उन्होंने यह समझाते हुए निष्कर्ष निकाला कि इन गहरी जड़ों वाले ऐतिहासिक, सांस्कृतिक और आध्यात्मिक संबंधों

के कारण तिब्बती लोग भारत को गुरु और खुद को शिष्य मानते हैं, जो दोनों देशों के बीच संबंधों में निहित गहरे सम्मान को दर्शाता है। रिनचेन ने छात्रों को क्षेत्रीय जल सुरक्षा में तिब्बती पठार की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताया और इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत के जल संसाधन नीचे की ओर एशियाई देशों में लगभग दो अरब लोगों के जीवनदायक हैं। उन्होंने चीनी पनबिजली परियोजनाओं, खनन गतिविधियों और पठार के सैन्यीकरण से होने वाले महत्वपूर्ण पर्यावरणीय खतरों के बारे में बताया और पूरे महाद्वीप में पारिस्थितिकीय स्थिरता और पानी की उपलब्धता के लिए गंभीर परिणामों की चेतावनी दी। उन्होंने छात्रों को चीन की क्षेत्रीय नीतियों के भू-राजनीतिक, खासकर भारत के सीमावर्ती क्षेत्रों में व्यवस्थित अतिक्रमण के परिणामों के बारे में भी बताया। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि चीन द्वारा तिब्बत पर कब्ज़े के बाद यह दुश्मनी और बढ़ गई, जब चीनी सैन्य बलों को उन सीमाओं पर तैनात किया गया, जो पहले भारत और तिब्बत के बीच शांतिपूर्वक सीमा के रूप में जानी जाती थीं। इससे भारत की सुरक्षा के लिए लगातार खतरा पैदा हो गया।

मानवाधिकार डेस्क के रिसर्च एसोसिएट तेनजिन कुंखेन ने चीनी प्रशासन के तहत तिब्बती सांस्कृतिक पहचान को निशाना बनाने वाली व्यवस्थित नीतियों के सबूत पेश किए। उन्होंने छात्रों को औपनिवेशिक शैली के आवासीय स्कूलों के बारे में बताया, जिन्हें तिब्बती बच्चों को हान चीनी संस्कृति में आत्मसात करने के लिए डिजाइन किया गया है। उन बच्चों को इस नीति के तहत तिब्बती भाषा की शिक्षा से वंचित रखा जाता है, मठों और बौद्ध संस्थानों को बड़े पैमाने पर ध्वस्त करके तिब्बती बौद्ध धर्म का जबरन चीनीकरण किया जा रहा है, परम पावन दलाई लामा की अनिवार्य निंदा, मठवासी समुदायों पर थोपी गई अनिवार्य 'देशभक्ति शिक्षा' कार्यक्रम, बौद्ध शिक्षकों और लामाओं की मनमानी गिरफ्तारी और सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म के माध्यम से तिब्बती बौद्ध सामग्री के प्रसार पर प्रतिबंध लगा दिया गया है।

उन्होंने छात्रों को गंभीर मानवाधिकार स्थिति के बारे में भी बताया, जिसमें कई तिब्बती राजनीतिक कैदियों को हिरासत के दौरान यातना और अमानवीय व्यवहार का सामना करना पड़ा, जिनमें से कई तो हिरासत के दौरान मौत के मुंह तक चले गए और कई के मौतों को दस्तावेज़ों में दर्ज किया गया। उन्होंने आत्मदाह विरोध प्रदर्शनों के विवरण प्रस्तुत किए, जो इस बात के सबूत हैं कि एक आबादी को व्यवस्थित रूप से मौलिक स्वतंत्रता से किस तरह वंचित किया जा रहा है। इस तरह की कार्रवाइयां अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून और चीन के अपने संविधान के भी तहत नाममात्र की गारंटीशुदा सुरक्षा का उल्लंघन है। ये घटनाएं पूरे तिब्बती सांस्कृतिक अस्तित्व पर खतरा हैं और भारत और व्यापक एशियाई क्षेत्र के लिए गहरे परिणामों के साथ एक अस्थिर करने वाली शक्ति का आगाज करती हैं।

रोजाना के कार्यक्रम की खास बातों के बारे में बात करें तो १० नवंबर २०२५ को, यह टूर रावत पब्लिक स्कूल, प्रताप नगर से शुरू हुआ, जहां स्कूल के निर्मला ऑडिटोरियम में ७०० से ज्यादा छात्रों और शिक्षकों ने हिस्सा लिया। निदेशक नरेंद्र सिंह रावत ने वक्ताओं का स्वागत किया और छात्रों को वैश्विक विविधताओं को आत्मसात करने और उनसे जुड़ने के लिए प्रोत्साहित किया। इसके बाद कक्षा १२ के छात्रों ने तिब्बत की मौजूदा स्थिति पर फोकस एक पॉडकास्ट रिकॉर्डिंग सेशन में हिस्सा लिया। बातचीत के बाद स्कूल ने दोनों वक्ताओं को तारीफ के तौर पर एक गमले वाला पौधा और स्कूल की पत्रिका भेंट की। स्कूल में तिब्बत जागरूकता बातचीत को दैनिक भास्कर अखबार में व्यापक रूप से कवर किया और उसे प्रकाशित किया गया। उसी दिन बाद में, वक्ताओं ने दैनिक भास्कर के मैनेजिंग एडिटर जगदीश शर्मा से मुलाकात की। ज्ञात हो कि दैनिक भास्कर भारत का सबसे बड़ा अखबार है, जिसके लगभग १४ करोड़ पाठक हैं। इन लोगों ने मुलाकात में तिब्बत की स्थिति और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के कामकाज पर चर्चा की।

११ नवंबर को किड्स क्लब स्कूल में स्कूल के चेयरमैन डॉ. टी.सी. पाठक ने सुबह की असेंबली के दौरान कक्षा छह से १२ तक के लगभग ३०० छात्रों के बीच अपना उद्बोधन दिया। छात्रों ने ध्यान से उनकी बातों को सुना और कई लोगों ने बाद में तारीफ भी की। इसके बाद इस प्रतिनिधिमंडल ने रावत नर्सिंग कॉलेज का दौरा किया, जहां की प्राचार्या सोनाक्षी और शिक्षकों के साथ लगभग ५० छात्र का एक सेमिनार का आयोजन किया गया। यहां पर वक्ताओं ने कॉलेज लाइब्रेरी को तिब्बत से संबंधित किताबें भेंट कीं, जिनमें 'वॉयस फॉर द वॉयसलेस, इंडिया-तिब्बत रिलेशंस और तिब्बत्स स्टोलन चाइल्ड' शामिल हैं। यहां वक्ताओं का स्वागत राजस्थानी पगड़ी पहनाकर किया गया और बाद में उन्हें स्कूल परिसर का भ्रमण भी कराया गया।

१२ नवंबर को पोद्दार ग्रुप ऑफ इंस्टीट्यूशंस के कॉलेज ऑडिटोरियम में लगभग १५० छात्रों और शिक्षकों ने वक्तव्य सुनने के कार्यक्रम में हिस्सा लिया। वक्ताओं ने चेयरमैन डॉ. आनंद पोद्दार से मुलाकात की और कॉलेज लाइब्रेरी के लिए तिब्बत पर लिखी कई किताबें भेंट कीं, जिसमें परम पावन दलाई लामा की जीवनी भी शामिल थीं। स्कूल ने जवाब में वक्ताओं को पट्टिकाएं और हाथ से बने स्कार्फ भेंट किए।

१३ नवंबर को सेंट्रल एकेडमी, तारा नगर में प्राचार्य और लगभग २०० शिक्षकों-छात्रों ने वक्ताओं का गर्मजोशी से स्वागत किया। बातचीत के बाद स्कूल ने वक्ताओं के सम्मान के प्रतीक रूप में पट्टिका भेंट की।

१४ नवंबर को सैंड ड्यून्स स्कूल में प्राचार्या लक्ष्मी ठाकुर ने वक्ताओं का स्वागत किया और उन्हें कार्यक्रम के बारे में जानकारी दी, जिसके बाद स्कूल के मैदान में आयोजित प्रस्तुति में लगभग ३०० छात्रों और शिक्षकों ने हिस्सा लिया। इसके बाद, ये वक्तागण रावत सीनियर सेकेंडरी स्कूल गए, जहां वे प्रिंसिपल से मिले और लगभग १२० छात्रों-शिक्षकों के समूह को संबोधित किया। बातचीत के बाद स्कूल ने वक्ताओं को सम्मानित करते हुए स्कूल का नाम और लोगो वाला एक मग भेंट किया। शाम को, ये वक्ता कोर ग्रुप फॉर तिब्बतन कॉज- इंडिया क्षेत्रीय संयोजक श्री सौरभ सारस्वत से मिले, जिन्होंने उन्हें राजस्थान के राज्य अध्यक्ष और भारतीय संसद के सदस्य श्री मदन राठौर और भाजपा के राजस्थान प्रदेश कार्यालय सचिव श्री मुकेश पारेख से मिलवाया। उन्हें तिब्बत जागरूकता कार्यक्रम के बारे में बताया गया और उन्हें 'वॉयस फॉर द वॉयसलेस' और परम पावन दलाई लामा की संक्षिप्त आत्मकथा भेंट की गई

१५ नवंबर को आखिरी दिन स्पीकर सेंट्रल एकेडमी, अंबाबाड़ी की प्राचार्य भावना से मिले और स्कूल के मैदान में इकट्ठा हुए लगभग ३०० छात्रों से बात की। कार्यक्रम की शुरुआत छात्रों द्वारा गाए गए स्वागत गीत से हुई, जिसके बाद वक्ताओं को यादगार चीजें- एक गमले में पौधा और एक किताब- भेंट की गईं। इसके बाद प्रतिनिधिमंडल नवभारती बी.एड. कॉलेज गया, जहां सहायक प्राध्यापक सत्येंद्र दुबे ने उनका स्वागत किया। लगभग २५ छात्रों और शिक्षकों ने ध्यान से उनकी प्रस्तुतियों को सुना और सवाल-जवाब किए। यह दौरा नवभारती सीनियर सेकेंडरी स्कूल में खत्म हुआ, जहां वक्ताओं ने स्कूल के चेयरमैन और डायरेक्टर

डॉ. प्रभात शर्मा से मुलाकात की और उन्हें तिब्बत जागरूकता कार्यक्रम के बारे में बताया। आखिरी प्रस्तुति में लगभग ४० छात्र शामिल हुए।

पूरे एक सप्ताह के कार्यक्रम के दौरान, सभी संस्थानों में वक्ताओं का गर्मजोशी से स्वागत किया गया, जो राजस्थान की मशहूर परंपराओं 'अतिथि देवो भव' और 'मनवार' को इंगित करती है, जिसमें मेहमानों का असाधारण सम्मान, देखभाल और उदारता के साथ स्वागत किया जाता है। स्कूल प्रशासन को छात्रों की भविष्य में शैक्षणिक यात्रा के लिए धर्मशाला आने के लिए प्रोत्साहित किया गया, ताकि छात्र तिब्बती संस्कृति और समुदाय में घुल-मिल सकें। संस्थागत नेताओं को धर्मशाला आने के लिए आमंत्रित किया गया और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन की ओर से दौरे की व्यवस्था करने में मदद का आश्वासन दिया गया, ताकि वे निर्वासित तिब्बती सरकार के कामकाज को बेहतर ढंग से समझ सकें।

छात्रों को तिब्बत के बारे में ज्ञान को गहरा करने के लिए खूब पढ़ने और लिखने, सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म पर तिब्बत के बारे में सही जानकारी शेयर करने और जब भी और जहां भी संभव हो, तिब्बत के लिए आवाज उठाने के लिए प्रोत्साहित किया गया। इस जागरूकता अभियान की सफल समाप्ति भारत-तिब्बत संबंधों को मजबूत करने और भारतीय युवाओं के बीच क्षेत्रीय सुरक्षा और स्थिरता के लिए तिब्बत के अहम महत्व की बेहतर समझ को बढ़ावा देने में एक महत्वपूर्ण कदम है।

- सीटीए अंतर्गत सूचना और अंतर्राष्ट्रीय संबंध विभाग में तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन की रिपोर्ट

◆ ११. शिक्षा विभाग ने नर्सिंग प्रोग्राम में एकेडमिक एक्सीलेंस के लिए गोल्ड मेडल से सम्मानित ग्यूरमे ल्हामो को बधाई दी

१२ नवंबर, २०२५

धर्मशाला। शेरिंग स्कॉलरशिप पाने वाली और कर्नाटक के मंगलुरु में निट्टे उषा इंस्टीट्यूट ऑफ नर्सिंग साइंसेज से ग्रेजुएट ग्यूरमे ल्हामो को 'बैचलर ऑफ साइंस इन नर्सिंग प्रोग्राम' में उनके शानदार प्रदर्शन के लिए गोल्ड मेडल से सम्मानित किया गया है। उन्हें यह मेडल ०७ नवंबर २०२५ को यूनिवर्सिटी के दीक्षांत समारोह में प्रदान किया गया।

हिमाचल प्रदेश के नांगचेन चौंतरा तिब्बती सेटलमेंट की रहने वाली ग्यूरमे ने अपनी स्कूली शिक्षा चौंतरा और मुंडगोड के संभूत तिब्बती स्कूलों से पूरी की। उनकी यह शानदार उपलब्धि सालों की लगन, अनुशासन और दृढ़ता को दिखाती है।

इस सम्मान को 'भावनात्मक और अविस्मरणीय पल' बताते हुए ग्यूरमे ने कहा कि इसने उनकी कड़ी मेहनत और प्रतिबद्धता को फिर से साबित किया है। उन्होंने अपनी सफलता का श्रेय टाइम मैनेजमेंट, निरंतरता और अपने परिवार, शिक्षकों और गुरुओं के अटूट समर्थन को दिया। उन्होंने शेरिंग स्कॉलरशिप प्रोग्राम के माध्यम से अपनी पढ़ाई में सहायता करने के लिए केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के शिक्षा विभाग (डीओई) के प्रति भी आभार व्यक्त किया। उनके चार साल के नर्सिंग कोर्स के खर्च का वहन डीओई स्कॉलरशिप के तहत डेनमार्क के डैनिडा द्वारा की गई थी।

नर्सिंग के मूल में करुणा और सेवा से प्रेरित होकर ग्यूरमे अब अपने ज्ञान को बढ़ाने और लौटने पर तिब्बती समुदाय में अधिक प्रभावी ढंग से योगदान देने के लिए मास्टर डिग्री हासिल करना चाहती हैं।

युवा तिब्बतियों को अपने संदेश में उन्होंने ईमानदारी, अनुशासन और अपनी पहचान पर गर्व करने पर जोर दिया। 'नर्सिंग या किसी भी क्षेत्र में सच्ची लगन और प्रतिबद्धता के साथ आगे बढ़ें। नर्सिंग एक ऐसा पेशा है जो कड़ी मेहनत, करुणा, जिम्मेदारी और सामुदायिक सेवा पर आधारित है।'

ग्यूरमे ने अपनी सफलता परम पावन १४वें दलाई लामा, अपने परिवार, संभूत तिब्बती स्कूलों के अपने शिक्षकों और शिक्षा विभाग को समर्पित की।

शिक्षा विभाग ने ग्यूरमे ल्हामो को हार्दिक बधाई दी और उनके भविष्य के सभी प्रयासों में निरंतर सफलता की कामना की।

- सीटीए के शिक्षा विभाग की रिपोर्ट

◆ १२. लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी में 'डेमोक्रेसी: ए गिफ्ट ऑफ हिज होलीनेस द दलाई लामा टू द तिब्बतन पीपुल' शीर्षक प्रदर्शनी का आयोजन

२१ नवंबर, २०२५

धर्मशाला, २० नवंबर २०२५। परम पावन महान १४वें दलाई लामा की ९०वीं जयंती के उपलक्ष्य में मनाए जा रहे 'करुणा वर्ष' समारोह के तहत निर्वासित तिब्बती संसद ने २० नवंबर २०२५ को लवली प्रोफेशनल यूनिवर्सिटी (एलपीयू), पंजाब में 'डेमोक्रेसी: ए गिफ्ट ऑफ हिज होलीनेस द दलाई लामा टू द तिब्बतन पीपुल (लोकतंत्र: परम पावन दलाई लामा का तिब्बती लोगों को एक उपहार)' शीर्षक से एक प्रदर्शनी का आयोजन किया।

यूनिवर्सिटी के सनकेन गार्डन में आयोजित इस प्रदर्शनी का उद्घाटन एलपीयू के प्रोफेसर और डिप्टी डीन नितिन भारद्वाज ने किया। इस कार्यक्रम के दौरान तिब्बती संसदीय सचिवालय के तेनजिन शेरप ने प्रदर्शनी का अवलोकन कराया और उपस्थित मेहमानों को स्मृति चिन्ह भेंट किए।

यह कार्यक्रम सुबह ८:३० बजे से शाम ६:०० बजे तक चला। इसमें यूनिवर्सिटी के छात्र कल्याण प्रभाग के एसएमएल (सोसाइटी फॉर मैनेजमेंट लर्निंग) के सहयोग से एलपीयू के तिब्बती छात्रों के साथ आयोजित किया गया था। प्रदर्शनी के आयोजन में सहायता करने वाले छात्र स्वयंसेवकों को तेनजिन शेरप द्वारा प्रशंसा के प्रतीक चिन्ह भेंट किए गए।

प्रदर्शनी ने सौ से अधिक छात्रों को परम पावन दलाई लामा के उल्लेखनीय योगदान और निर्वासन में तिब्बती लोकतंत्र के विकास से परिचित कराया। तिब्बती संसदीय सचिवालय की आयोजन टीम में स्टाफ सदस्य तेनजिन शेरप, चोएडक, रिनचेन और लोबसांग सोमो शामिल थे।

-तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

१३. भोपाल में तिब्बती स्कूलों की भागीदारी से ५२वीं राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी संपन्न

२४ नवंबर, २०२५

धर्मशाला। क्षेत्रीय शिक्षा संस्थान, श्यामला हिल्स, भोपाल में ५२वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (नेशनल चिल्ड्रन्स साइंस एग्जीबिशन) छह दिनों के गतिशील वैज्ञानिक नवाचार और सांस्कृतिक आदान-प्रदान के साथ २३ नवंबर २०२५ को संपन्न हुई। इस दौरान राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद (एनसीईआरटी) द्वारा स्कूल शिक्षा विभाग के सहयोग से आयोजित इस कार्यक्रम में पूरे भारत के युवा नवोन्मेषक की रचनात्मकता और वैज्ञानिक प्रतिभा का प्रदर्शन किया गया।

प्रदर्शनी का उद्घाटन १८ नवंबर को मुख्यमंत्री डॉ. मोहन यादव ने केंद्र और राज्य सरकारों के वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में किया। ३१ राज्यों और केंद्र शासित प्रदेशों के २२९ स्कूलों द्वारा प्रस्तुत २४० विज्ञान मॉडलों को देखने के लिए प्रतिदिन २,००० से अधिक आगंतुक आए। प्रतिभागियों में केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) स्कूलों, केंद्रीय विद्यालयों, जवाहर नवोदय विद्यालयों और परमाणु ऊर्जा स्कूलों जैसे स्वायत्त संस्थान शामिल थे। इन स्कूलों ने वैज्ञानिक, गणितीय और पर्यावरणीय विषयों से संबंधित परियोजनाओं के साथ-साथ अपनी अनूठी पहचान को उजागर करने वाली सांस्कृतिक प्रस्तुतियां भी प्रदर्शित कीं।

छात्रों, शिक्षकों, नवाचार वाले प्रतिभागियों, वैज्ञानिकों, सरकारी अधिकारियों और आम जनता सहित १०,००० से अधिक लोगों ने इस कार्यक्रम में भाग लिया। कार्यक्रम में प्रमुख वैज्ञानिकों के साथ आदान-प्रदान सत्र और भारत की विविधता को प्रतिबिंबित करने वाले सांस्कृतिक प्रदर्शन शामिल थे। शौर्य स्मारक, जनजातीय संग्रहालय, क्षेत्रीय विज्ञान केंद्र और ग्लोबल स्किल पार्क के लिए शैक्षिक दौरे आयोजित किए गए। समापन समारोह में भारत सरकार के शिक्षा मंत्रालय के स्कूल शिक्षा और साक्षरता विभाग के सचिव डॉ. संजय कुमार, मध्य प्रदेश के स्कूल शिक्षा विभाग के सचिव डॉ. संजय गोयल और डीईएसएम, एनसीईआरटी की प्रमुख प्रोफेसर सुनीता फर्क्या और राष्ट्रीय नवाचार फाउंडेशन के निदेशक डॉ. अरविंद सी. रानाडे उपस्थित थे। छात्रों, प्रदर्शकों, मार्गदर्शक शिक्षकों, स्कूलों और सीटीए के शिक्षा विभाग को अपनी-अपनी उपलब्धियों के लिए प्रमाण-पत्र प्रदान किए गए।

प्रदर्शनी 'एक स्थायी भविष्य के लिए विज्ञान और प्रौद्योगिकी' विषय पर केंद्रित थी। प्रदर्शनी कई उप-विषयों में वर्गीकृत की गई थी। इनमें पहला विषय- भोजन, स्वास्थ्य और स्वच्छता, दूसरा विषय- परिवहन और संचार, तीसरा विषय- प्राकृतिक खेती, चौथा विषय- आपदा प्रबंधन, पांचवां गणितीय मॉडलिंग और कम्प्यूटेशनल सोच, छठा विषय- अपशिष्ट प्रबंधन और सातवां थीम- संसाधन प्रबंधन रखा गया था।

राष्ट्रीय स्तर के कार्यक्रम की तैयारी में, सीटीए के शिक्षा विभाग ने एनसीईआरटी द्वारा दिए गए थीम के आधार पर अलग-अलग तिब्बती स्कूलों में प्रारंभिक स्कूल-स्तरीय प्रदर्शनियों का आयोजन किया। जीतने वाले प्रोजेक्ट आठवें स्तरीय स्तरीय विज्ञान, गणित और पर्यावरण प्रदर्शनी में आगे बढ़े, जो १७ से १९ जुलाई तक टीसीवी स्कूल, अपर धर्मशाला में आयोजित हुई। वहां से १२ सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शनों को एनसीईआरटी को भेजा गया और उनमें से ५२वें आरबीवीपी के लिए पांच तिब्बती स्कूलों से पांच प्रदर्शनों का चयन किया गया।

कुल नौ छात्रों और पांच एस्कॉर्ट शिक्षकों ने राष्ट्रीय मंच पर सीटीए स्कूलों का प्रतिनिधित्व किया। भाग लेने वाले स्कूलों में अपर टीसीवी स्कूल, टीसीवी सेलाकुई स्कूल, एसटीएस मसूरी, हरबर्टपुर और एसटीएस मुंडगोड शामिल थे। उन्होंने शाम के सांस्कृतिक कार्यक्रम में भी हिस्सा लिया, जिसमें तिब्बती स्कूलों की अलग-अलग प्रतिभा और सर्जनात्मक प्रस्तुतियां देखने को मिली।

विज्ञान शिक्षा अधिकारी दोरजी वांगड्यू ने इस कार्यक्रम में हिस्सा लिया और राज्य समन्वयक और एनसीईआरटी के अधिकारियों के साथ दो दिन की बैठक में शामिल हुए। उन्होंने सीटीए स्तर पर एसटीईएम प्रदर्शनी के मैकेनिज्म पर अपनी राय जाहिर की और तिब्बती छात्रों को अपने वैज्ञानिक कौशल का प्रदर्शन करने के लिए एक नेशनल प्लेटफॉर्म देने के लिए एनसीईआरटी और भारत सरकार का आभार जताया।

इस प्रतिष्ठित आयोजन ने तिब्बती स्कूलों और देश भर के उनके साथियों को अपनी वैज्ञानिक प्रतिभा दिखाने, ज्ञानवर्धक सांस्कृतिक आदान-प्रदान में भाग लेने और यह जानने का एक अनमोल मंच प्रदान किया कि विज्ञान और टेक्नोलॉजी कैसे एक स्थायी और समावेशी भविष्य में योगदान दे सकते हैं।

- सीटीए के शिक्षा विभाग की रिपोर्ट

◆ १४. भारतीय सांसद दोरजी शेरिंग लेपचा ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

२४ नवंबर, २०२५

धर्मशाला, २१ नवंबर २०२५। सिक्किम से राज्यसभा सांसद दोरजी शेरिंग लेपचा ने शुक्रवार को धर्मशाला में निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया और स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग से मुलाकात की।

बैठक में स्पीकर खेनपो सोनम तेनफेल ने निर्वासन के ६५ वर्षों के दौरान तिब्बती समुदाय की भाषा, संस्कृति और धर्म को संरक्षित करने में भारत सरकार और लोगों के लंबे समय से मिल रहे समर्थन के लिए हार्दिक आभार व्यक्त किया।

स्पीकर ने संसदीय सत्र के दौरान सीमा क्षेत्र को भारत-चीन सीमा के बजाय भारत-तिब्बत सीमा के रूप में संदर्भित करने का मुद्दा उठाने के लिए राज्यसभा सांसद को

धन्यवाद दिया। उनके समर्थन की मान्यता में सांसद दोरजी शेरिंग लेपचा को ऐतिहासिक शाकप्पा पासपोर्ट की एक प्रति भेंट की गई, जो १९४७ में तत्कालीन स्वतंत्र तिब्बत सरकार द्वारा वित्त सचिव सेपोन वांगचुक देधेन शाकप्पा को जारी किया गया था और जिस पर कई देशों के वीजा लगे हुए थे।

डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग ने परम पावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती लोकतंत्र के विकास के बारे में बात की और वैश्विक कार्यक्रमों और पहलों के माध्यम से परम पावन की ९०वीं जयंती के अवसर पर केंद्रीय तिब्बती प्रशासन द्वारा 'करुणा वर्ष' मनाने पर प्रकाश डाला।

उन्होंने सांसद को तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति और तिब्बती संसद के अंतरराष्ट्रीय पक्षधरता अभियान के प्रयासों के बारे में भी जानकारी दी। इसमें तिब्बत पर विश्व सांसदों का सम्मेलन शामिल है, जो पहली बार १९९४ में दिल्ली में आयोजित किया गया था और तब से नौ बार आयोजित किया जा चुका है। साथ ही संबंधित पहलों का समर्थन करने में तिब्बत के लिए सर्वदलीय भारतीय संसदीय मंच (एपीआईपीएफटी) द्वारा निभाई गई महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में भी बताया।

सांसद लेपचा के साथ उनके परिवार के सदस्य और कर्मचारी भी थे। इस प्रतिनिधिमंडल को संसद भवन का निर्देशित दौरा कराया गया।

- तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

देशों की जनता द्वारा अनुभव किए गए दुख, संघर्ष और स्वतंत्रता की आकांक्षाओं के साझा इतिहास पर प्रकाश डाला।

स्पीकर ने बाल्टिक क्षेत्र के साथ निर्वासित तिब्बती संसद की भागीदारी पर भी बात की, जिसमें १९९५ में लिथुआनिया में आयोजित दूसरे विश्व सांसदों के तिब्बत सम्मेलन और २०१९ में लातविया में आयोजित सातवें सम्मेलन का जिक किया गया।

प्रतिनिधिमंडल को बताया गया कि कैसे परम पावन दलाई लामा की करुणा, अहिंसा और संवाद की शिक्षाओं ने तिब्बती स्वतंत्रता संघर्ष और निर्वासन में लोकतंत्र के कामकाज दोनों को आकार दिया है। उन्हें निर्वासित तिब्बती संसद के विकास, संरचना और जिम्मेदारियों के साथ-साथ केंद्रीय तिब्बती प्रशासन (सीटीए) के मुख्य उद्देश्यों के बारे में भी जानकारी दी गई।

इसके अलावा, चर्चा तिब्बत के अंदर की गंभीर स्थिति पर भी हुई। स्पीकर ने आने वाले प्रतिनिधियों से अपील की कि वे सीटीए के मुख्यालय की अपनी यात्रा के दौरान सुनी गई बातों को और आगे बढ़ाएं और तिब्बत पर विश्व सांसदों के नौवें सम्मेलन के दौरान अपनाई गई कार्य योजनाओं को लागू करने की दिशा में काम करें।

- तिब्बती संसदीय सचिवालय की रिपोर्ट

◆ १५. एस्टोनियाई प्रतिनिधिमंडल ने निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया

२५ नवंबर, २०२५

धर्मशाला, २४ नवंबर २०२५। एस्टोनियाई संसद के तिब्बत समर्थक समूह के अध्यक्ष सांसद जुकु-काले रेड के नेतृत्व में एक एस्टोनियाई प्रतिनिधिमंडल ने आज २४ नवंबर को निर्वासित तिब्बती संसद का दौरा किया। प्रतिनिधिमंडल ने स्पीकर खेन्पो सोनम तेनफेल और डिप्टी स्पीकर डोल्मा शेरिंग तेखांग से मुलाकात की और आपसी हित के कई मुद्दों पर चर्चा की।

प्रतिनिधिमंडल में एस्टोनियाई संसद के सदस्य टिट मारन (पीएचडी), सांसद एंटी पूलामेट्स, सांसद मार्गिट सुट्रोप (प्रोफेसर, पीएचडी) के साथ एस्टोनियाई संसद में तिब्बत समर्थक समूह के समन्वयक रॉय स्ट्राइडर और अन्य लोग शामिल थे।

यह बैठक स्थायी समिति हॉल में हुई, जो संसदीय सचिवालय की लाइब्रेरी के रूप में भी काम आता है। चर्चा के दौरान स्पीकर और डिप्टी स्पीकर ने एस्टोनिया और तिब्बत के बीच लंबे समय से चले आ रहे संबंधों पर प्रकाश डाला और तिब्बती मुद्दे के लिए एस्टोनिया के अटूट समर्थन के लिए आभार व्यक्त किया। उन्होंने दोनों

◆ १६. पुरूवाला तिब्बती सेटलमेंट द्वारा 'करुणा वर्ष' पर गर्म कपड़ों का वितरण

२६ नवंबर, २०२५

पुरूवाला (हिमाचल प्रदेश)। करुणा वर्ष के सम्मान में और परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में, पुरूवाला तिब्बती सेटलमेंट ने मुश्किलों का सामना कर रहे परिवारों की मदद के लिए सर्दियों के कपड़े दान करने का अभियान चलाया। इस प्रयास के तहत, बुजुर्गों और बच्चों के लिए गर्म जैकेट, महिलाओं और पुरुषों के लिए स्वेट शर्ट और स्वेटर दिए गए, ताकि ठंड के महीनों में उन्हें आराम मिल सके।

इस पहल का समन्वय तिब्बती सेटलमेंट अधिकारी तेनजिन नामग्याल और साक्य तिब्बती सोसाइटी के महासचिव न्यिमा शेरिंग ने किया। सेटलमेंट के सदस्यों के साथ मिलकर उन्होंने पास में पुरूवाला के अंबिवाला सरकारी स्कूल का दौरा किया, जहां स्कूल के शिक्षक अजय चौहान और एसएमसी प्रधान मोहन सिंह की मौजूदगी में कक्षा एक से पांच तक के ३३ छात्रों को गर्म जैकेट दिए गए।

समूह ने एक अकेली माँ के घर भी दौरा किया, जो जन्म से ही दृष्टिहीन हैं और उन्हें काफी आर्थिक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है। वह अपने दो बच्चों के साथ

एक रिश्तेदार की देखभाल में रहती हैं। सर्दियों में उनकी मदद करने के लिए सेटलमेंट ने परिवार को गर्म स्वेटर और जैकेट दिए।

सेवा का यह छोटा सा कार्य परम पावन से प्रेरित करुणा और सामूहिक जिम्मेदारी के मूल्यों को दर्शाता है और इसने समुदाय के उन सदस्यों को गर्माहट और आश्वासन का एक पल दिया, जिन्हें इसकी सबसे ज्यादा जरूरत थी।

- तिब्बती सेटलमेंट कार्यालय, पुरूवाला की रिपोर्ट

◆ १७. खाम कथोक तिब्बती सेटलमेंट ने यमुना नदी के पास पोंटा साहिब में जरूरतमंद समुदायों में कपड़े बांटे

२७ नवंबर, २०२५

सताउन (हिमाचल प्रदेश)। 'करुणा वर्ष' के रूप में मनाए जा रहे परम पावन १४वें दलाई लामा के ९०वें जन्मदिन के उपलक्ष्य में घोटन कार्यकम के तहत खाम कथोक तिब्बती सेटलमेंट ने २६ नवंबर २०२५ को शुभ्र सफेद बुधवार के अवसर पर यमुना नदी के पास पोंटा साहिब में जरूरतमंद परिवारों के बीच कपड़े बांटने का कार्यकम आयोजित किया।

सेटलमेंट ऑफिसर उगेन चोएडन ओशो की देखरेख में सितंबर से खाम कथोक तिब्बती सेटलमेंट के निवासियों से कपड़े इकट्ठा किए गए। इसके अलावा, स्थानीय झुग्गी-झोपड़ी समुदाय की जरूरतों को पूरा करने के लिए पोंटा साहिब में १७५ छोटे कंबल खरीदे गए।

सर्दियों की शुरुआत के साथ, सेटलमेंट ऑफिसर और टीएसओ स्टाफ ने रहने की स्थिति का आकलन करने और स्थानीय नेता दुर्गेश कुमार से संपर्क स्थापित करने के लिए झुग्गी-झोपड़ी वाले इलाके का दौरा किया।

२६ नवंबर २०२५ को सुबह १०:०० बजे, झुग्गी-झोपड़ी के लगभग २०० निवासियों में वितरण शुरू हुआ। इस इलाके में लगभग ४० परिवार हैं, जिनमें ज्यादातर युवा और बच्चे हैं। ये लोग गरीबी की हालत में रह रहे हैं। इनमें ६० साल के बुजुर्ग से लेकर तीन महीने के बच्चे तक शामिल हैं। इनके बीच कंबल, शॉल, जूते और वयस्कों और बच्चों दोनों के लिए कपड़े सहित कई तरह की चीजें बांटी गईं। इस पहल का मकसद परम पावन दलाई लामा की शिक्षाओं, खासकर जब भी संभव हो दूसरों की मदद करने पर जोर देना जैसे उपदेशों पर अमल करना है।

खाम कथोक घोटन समिति के प्रयासों और दुर्गेश कुमार के सहयोग से वितरण सुबह ११:३० बजे सफलतापूर्वक संपन्न हुआ, जिसमें हर चीज का हिसाब रखा गया और जरूरतमंद लोगों को प्रदान की गई वस्तुएं शामिल हैं।

-टीएसओ सताउन की रिपोर्ट

◆ १८. जिनेवा स्थित तिब्बत कार्यालय द्वारा प्रतिनिधि थिनले चुक्की के नेतृत्व में उच्चस्तरीय राजनयिक और एडवोकेसी बैठकों की शृंखला आयोजित

२८ नवंबर, २०२५

जिनेवा, २६ नवंबर २०२५। जिनेवा स्थित तिब्बत कार्यालय के एक प्रतिनिधिमंडल ने जिनेवा में तिब्बत और तिब्बती समुदाय को प्रभावित करने वाले मुद्दों से अंतरराष्ट्रीय जुड़ाव को मजबूत करने के उद्देश्य से उच्चस्तरीय राजनयिक और एडवोकेसी बैठकों की शृंखला आयोजित की। प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व परम पावन दलाई लामा की प्रतिनिधि थिनले चुक्की ने किया और इसमें संयुक्त राष्ट्र एडवोकेसी अधिकारी फुंटसोक टॉपग्याल शामिल रहे।

प्रतिनिधिमंडल की बैठकों की शुरुआत महामहिम ग्रेग जी.डी. ली, जिनेवा, स्विट्जरलैंड में ताइवान के राजदूत, और प्रथम सचिव रिचर्ड जिंग्याओ लिन के साथ चर्चा से हुई। इन वार्ताओं में तिब्बत और ताइवान के बीच संवाद, सांस्कृतिक आदान-प्रदान और आपसी समझ को बढ़ावा देने के लिए डिजाइन किए गए सम्मेलनों, कार्यशालाओं और अन्य पहलों के माध्यम से सहयोग के अवसरों की खोज पर ध्यान केंद्रित किया गया।

संयुक्त पहलों और एडवोकेसी सहयोग के लिए संभावित क्षेत्रों की पहचान करने के लिए अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार सेवा (आईएसएचआर) के साथ भी बैठकें आयोजित की गईं। उन्होंने सद्भावना के प्रतीक के रूप में परम पावन दलाई लामा की आत्मकथा 'वॉयस फॉर द वॉयसलेस' भी भेंट की।

दोपहर में प्रतिनिधिमंडल ने संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार उच्चायुक्त कार्यालय (ओएचसीएचआर) के कर्मचारियों और शिक्षा के अधिकार पर विशेष प्रतिवेदक के प्रतिनिधियों के साथ एक बंद कमरे में बैठक की, जिसमें तिब्बती समुदायों के लिए शैक्षिक अवसरों को मजबूत करने की रणनीतियों पर चर्चा की गई।

प्रतिनिधिमंडल ने तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट द्वारा प्रकाशित 'रेजिडेंशियल स्कूल रिपोर्ट- २०२५' पर विचार-विमर्श करने के लिए पैलेस डेस नेशंस में यूनाइटेड किंगडम मिशन के प्रतिनिधियों से भी मुलाकात की।

जिनेवा प्रतिनिधिमंडल में जिनेवा स्थित तिब्बत कार्यालय की प्रतिनिधि थिनले चुक्की, संयुक्त राष्ट्र एडवोकेसी अधिकारी फुंटसोक टॉपग्याल, चीनी संपर्क अधिकारी सांग्ये क्यप, तिब्बत एक्शन इंस्टीट्यूट का प्रतिनिधित्व करने वाले तेनजिन दोरजी, स्टूडेंट्स फॉर ए फ्री तिब्बत से पेमा डोल्मा और सेलहा शामिल रहे।

ये बैठकें मानवाधिकारों को बढ़ावा देने, तिब्बती सांस्कृतिक विरासत की रक्षा करने और दुनिया भर में तिब्बती समुदायों के लिए शैक्षिक अवसरों को आगे बढ़ाने के लिए तिब्बत कार्यालय की स्थायी प्रतिबद्धता को रेखांकित करती हैं। जिनेवा में प्रतिनिधिमंडल का काम वैश्विक स्तर पर तिब्बत और तिब्बतियों के लिए महत्वपूर्ण मुद्दों पर सार्थक संवाद और सहयोगात्मक कार्रवाई में अंतरराष्ट्रीय समुदाय को शामिल करने के चल रहे प्रयास को प्रदर्शित करता है।

-तिब्बत कार्यालय, जिनेवा की रिपोर्ट

◆ १९. सांसदों और समर्थकों ने कांग्रेस की सुनवाई के दौरान तिब्बत के लिए मजबूत समर्थन की मांग की

२४ नवंबर, २०२५

-इंटरनेशनल कैंपेन फॉर तिब्बत, २१ नवंबर २०२५

चीन पर 'कांग्रेसनल-एग्जीक्यूटिव कमीशन' की ताजा सुनवाई में चीनी ईसाइयों, एक हुयी मुस्लिम और एक तिब्बती बौद्ध आईसीटी के भुचुंग के. शेरिंग की गवाही हुई। इसमें चीन के तिब्बत पर चल रहे कब्ज़े पर कड़ा रुख अपनाने के लिए नई पहलों की जोरदार मांग भी शामिल थी।

२० नवंबर, २०२५ को हुई इस सुनवाई का शीर्षक था 'चीन का धर्म पर युद्ध: धार्मिक स्वतंत्रता के लिए खतरा और यह संयुक्त राज्य अमेरिका के लिए क्यों मायने रखता है'। अन्य गवाहों में अंतरराष्ट्रीय धार्मिक स्वतंत्रता के पूर्व राजदूत सैम ब्राउनबैक, हुयी मुस्लिम मानवाधिकार कार्यकर्ता इस्माइल जुमा, चाइनाएड के संस्थापक और अध्यक्ष बॉब फू और पादरी एज़्रा जिन की बेटी ग्रेस जिन ड्रेक्सेल शामिल थीं।

सुनवाई की अध्यक्षता सीईसीसी के अध्यक्ष ऑकलैंड से रिपब्लिकन सांसद सेन. डैन सुलिवन ने की और इसमें सह-अध्यक्ष न्यू जर्सी से प्रतिनिधि सभा में रिपब्लिकन सदस्य क्रिस स्मिथ, मैसाच्युसेट्स से डेमोक्रेटिक प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न, ओरेगन से डेमोक्रेटिक सांसद सेन. जेफ मर्कले, अलबामा से रिपब्लिकन प्रतिनिधि डेल स्ट्रॉन्ग और वर्जिनिया से रिपब्लिकन प्रतिनिधि जेन किगंस शामिल हुए

चीन के लिए कार्रवाई निश्चित करने की जरूरत

सुनवाई के दौरान तिब्बत का मुद्दा बार-बार उठा, जिसमें पैनलिस्ट और विधायक दोनों इस बात पर सहमत थे कि दलाई लामा और केंद्रीय तिब्बती प्रशासन के प्रतिनिधियों के साथ बातचीत फिर से शुरू करने से चीन के इनकार करने की एवज में उस पर कार्रवाई तय किए जाने चाहिए।

ब्राउनबैक ने अपनी शुरुआती टिप्पणियों में कहा, 'आज तिब्बत में सांस्कृतिक संहार हो रहा है और हमें इसे उजागर करने की जरूरत है।'

उन्होंने आगे कहा, 'हमें अगले दलाई लामा को नियुक्त करने के अधिकार के चीनी सरकार के दावे को सिरे से खारिज कर देना चाहिए और कहा कि उपराष्ट्रपति वैंस या विदेश मंत्री मार्को रूबियो को दलाई लामा से मिलने के लिए धर्मशाला जाना चाहिए।

ब्राउनबैक ने घोषणा की, 'मेरा मानना है कि हमें तिब्बत पर दलाई लामा के 'मध्यम मार्ग दृष्टिकोण' के लिए अपने समर्थन की घोषणा करनी चाहिए और अगर चीन एक निश्चित समय सीमा, मान लीजिए ६० दिनों के भीतर इस पर सहमत नहीं होता है, तो हमें तिब्बत को स्वतंत्र देश के रूप में मान्यता देने की घोषणा करनी चाहिए।' मैसाचुसेट्स से डेमोक्रेटिक प्रतिनिधि जिम मैकगवर्न ने इससे अपनी सहमति जताई। उन्होंने कहा कि 'वैसे, एंबेसडर ब्राउनबैक और मैं तिब्बती मुद्दे पर एक तरह की बेचैनी महसूस करता हूं।'

मैकगवर्न ने आगे कहा, 'हमें ऐसे नतीजों के बारे में सोचने की जरूरत है, ऐसे जवाब जो निंदा के शब्दों से ज्यादा हों, बल्कि जिनका असर हो। मुझे असल में इनमें से कुछ चीज़ों पर डेडलाइन तय करने का विचार पसंद है और अगर चीन बात नहीं मानता है, तो हम औपचारिक रूप से तिब्बत को एक आजाद देश के तौर पर मान्यता देंगे।'

मैकगवर्न के इस प्रस्ताव के बारे में पूछे जाने पर आईसीटी के भुचुंग शेरिंग ने अंतरराष्ट्रीय समर्थन की जरूरत पर जोर दिया।

शेरिंग ने कहा, 'दलाई लामा और तिब्बती लोगों के चुने हुए नेतृत्व ने एक समाधान के लिए पूरी ईमानदारी से काम किया है और शांतिपूर्ण संघर्ष का जो रास्ता उन्होंने दिखाया है, उसे पूरा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय समर्थन की जरूरत है। अगर चीन पर काफ़ी अंतरराष्ट्रीय दबाव डाला जाता है, चाहे आप जिन कामों का जिक कर रहे हैं, उनके जरिए या अमेरिकी नीति को मजबूत करने के किसी और तरीके से, तो इससे तभी मदद मिलेगी जब चीनी सरकार बैठकर तिब्बत के मुद्दे को हल करे।'

मैकगवर्न ने जवाब दिया, 'मैं इसकी सराहना करता हूं। हमें यहां कांग्रेस में इसे और आगे बढ़ाने की जरूरत है, और हमें प्रशासन को उन साधनों का इस्तेमाल करने के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत है, जो हमने उन्हें चीन पर और ज्यादा दबाव डालने के लिए दिए हैं।'

◆ २०. तिब्बती बौद्ध बीजिंग द्वारा 'थोपे व्यक्ति' को खारिज करेंगे

१८ नवंबर, २०२५

विशेषज्ञों ने कहा कि बीजिंग का यह दावा कि अगला बौद्ध धर्मगुरु चीन से ही होना चाहिए, एक जबरदस्ती की राजनीतिक चाल है जो नाकाम हो जाएगी।

- ताइपे टाइम्स में चेन यू-फू और सैम गार्सिया

चीन की यह शर्त कि दलाई लामा का पुनर्जन्म चीन में हो और बीजिंग द्वारा अनुमोदित हो, आलोचना का विषय बन गई है, ताइपे में कल एक फोरम में विशेषज्ञों ने कहा कि अगर बीजिंग अपना दलाई लामा पेश करता है, तो उस व्यक्ति को तिब्बती बौद्ध समुदाय द्वारा मान्यता नहीं दी जाएगी।

विशेषज्ञों ने परम पावन दलाई लामा के तिब्बत धार्मिक फाउंडेशन द्वारा आयोजित दो दिवसीय फोरम में ये टिप्पणियां कीं। इस फोरम का शीर्षक था, 'द स्नो लैंड फोरम: फाइंडिंग कॉमन ग्राउंड ऑन तिब्बत।'

'तिब्बत हैज नेवर बीन ए पार्ट ऑफ चाइना' के लेखक लियू हान-चेंग (劉漢城) ने फोरम में कहा कि चीन का कहना है कि उसे दलाई लामा के पुनर्जन्म का निर्धारण करने का अधिकार है, क्योंकि वह प्राचीन काल से तिब्बत पर संप्रभुता का दावा करता है।

लियू ने चीन के सूत्रों का हवाला देते हुए कहा कि १९४९ से पहले चीन ने कभी भी तिब्बत पर संप्रभुता स्थापित नहीं की, इसलिए उसे दलाई लामा के पुनर्जन्म का फैसला करने का कोई अधिकार नहीं है।

उन्होंने कहा कि दलाई लामा के पुनर्जन्म की प्रक्रिया चीन में धार्मिक अनुष्ठानों या कानूनों से उत्पन्न नहीं होती है, इसलिए बीजिंग के पास इस बात में हस्तक्षेप करने का कोई ऐतिहासिक, कानूनी या नैतिक आधार नहीं है कि तिब्बती इस पद पर अभिषिक्त होने वाले अगले व्यक्ति का चयन कैसे करते हैं।

उन्होंने कहा कि शुरुआती चीनी गणराज्य (आरओसी) आंतरिक उथल-पुथल और युद्धों में इतना उलझा था कि वह तिब्बत पर नियंत्रण नहीं कर सका और किंग राजवंश के पतन के बाद, ब्रिटिश समर्थन ने तिब्बत से बचे- खुचे किंग सेनाओं को बाहर निकालने में तिब्बतियों को सक्षम बनाया।

लियू ने कहा कि १९४९ में पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना (पीआरसी) की स्थापना

से पहले, आरओसी का तिब्बत में वस्तुतः कोई प्रभाव नहीं था।

न्यूयॉर्क स्थित चीनी भाषा की पत्रिका बीजिंग स्प्रिंग के संपादक हू पिंग (胡平) ने कहा कि तिब्बती बौद्ध जीवित बुद्धों के पुनर्जन्म पर अपने नियमों में चीन की तीन में से कोई भी शर्त नहीं मानते हैं। उन्होंने कहा कि यह शर्त कि दलाई लामा चीन में ही मिलने चाहिए, बेकार है क्योंकि देश की सीमाओं के बाहर से दलाई लामा को चुनने का ऐतिहासिक उदाहरण है, उन्होंने आगे कहा कि चौथे दलाई लामा, योंटेन ग्यात्सो मंगोलिया में पैदा हुए थे।

उन्होंने कहा कि पुनर्जन्म लेने वाले जीवित बुद्धों की खोज तिब्बती बौद्ध धर्म के प्रसार और उसके अनुयायियों के प्रसार पर आधारित है, जो देशों की सीमाओं तक सीमित नहीं है।

उन्होंने कहा कि दूसरी शर्त कि 'गोल्डन अर्न' लॉटरी विधि का इस्तेमाल किया जाना चाहिए, में महत्वपूर्ण ऐतिहासिक उदाहरण की कमी है, क्योंकि इस विधि का इस्तेमाल केवल किंग राजवंश के दौरान एक या दो दलाई लामाओं की पहचान करने के लिए किया गया था।

हू ने कहा कि आखिर शर्त कि दलाई लामा को चीनी सरकार द्वारा मान्य किया जाना चाहिए, जैसे कि दलाई लामा बीजिंग द्वारा नियुक्त कोई 'अधिकारी' हों, काम नहीं करता। क्योंकि नियुक्त व्यक्ति को ज़्यादातर तिब्बती बौद्ध अस्वीकार कर देंगे और आखिरकार यह एक ऐतिहासिक शर्मिंदगी बन जाएगी।

फूयिन यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर सु चिया-होंग (蘇嘉宏) ने कहा कि आखिरकार दो दलाई लामा हो सकते हैं। एक जिसे विदेश में रहने वाले तिब्बती बौद्ध समुदाय द्वारा चुना जाएगा और दूसरा चीनी सरकार द्वारा थोपा गया।

परम पावन दलाई लामा के तिब्बत धार्मिक फाउंडेशन के अध्यक्ष केलसांग ग्यालस्टेन बावा ने कहा कि अगर दलाई लामा का पुनर्जन्म ताइवान में होता है, जिसे चीन अपना क्षेत्र बताता है, तो बीजिंग की यह स्थिति कि पुनर्जन्म चीन के अंदर ही होना चाहिए, खत्म हो जाएगी। क्योंकि उसके पास जो भी राजनीतिक तर्क हैं, वे उल्टे पड़ जाएंगे।

बावा ने दोहराया कि दलाई लामा तेनजिन ग्यात्सो ने जुलाई में कहा था कि उनके पुनर्जन्म पर सर्वोच्च अधिकार दलाई लामा के गादेन फोडरंग फाउंडेशन का है।

नेशनल मेडिकल यूनिवर्सिटी के प्रोफेसर चांग कुओ-चेंग (張國城) ने बावा के दृष्टिकोण का समर्थन करते हुए कहा कि अगर दलाई लामा का पुनर्जन्म ताइवान में होता है तो चीन को एक विरोधाभास का सामना करना पड़ेगा।

चांग ने कहा कि अगर ताइवान कभी बीजिंग के नियंत्रण में आता है, तो उसे तिब्बत से भी बदतर दमन का सामना करना पड़ेगा। उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि तिब्बत का समर्थन करके ताइवान खुद का समर्थन कर रहा है।

- फांग वेई-ली की अतिरिक्त रिपोर्टिंग

◆

२१. गोन्नम, गोंत्से, जिग्मे तेनजिन, पाल्डेन, लोचो, नामग्याल, नोर्डे, कालसांग

तिब्बत के राजनीतिक कैदियों को जानें संक्षिप्त प्रोफाइल: 20 अक्तूबर 2023 को गोलोक प्रीफेक्चर के धारलाग काउंटी में चीनी अधिकारियों ने ग्युसुम टाउनशिप के आठ तिब्बतियों को मनमाने ढंग से हिरासत में ले लिया। उन पर लोगों की धार्मिक भावनाओं का फायदा उठाने के लिए धार्मिक विश्वास का दुरुपयोग करने और निजी फायदे के लिए वित्तीय धोखाधड़ी करने के मनगढ़ंत आरोप लगाए गए थे, क्योंकि वे धार्मिक चढ़ावे के लिए चंदा इकट्ठा कर रहे थे। सरकार ने हिरासत में लिए गए लोगों के बारे में जानकारी देने वालों को इनाम देने की घोषणा करते हुए सार्वजनिक नोटिस जारी किए, जिससे तिब्बती समुदायों में डर और आत्म-सेंसरशिप का माहौल बन गया। हिरासत में लिए गए लोगों की पहचान गोन्नम, गोंत्से, जिग्मे तेनजिन, पाल्डेन, लोचो, नामग्याल, नोर्डे और कालसांग के रूप में हुई है। ये गिरफ्तारियां धार्मिक अभिव्यक्ति पर गंभीर प्रतिबंधों को दर्शाती हैं, जिसमें 20एए नियमों के तहत ऑनलाइन गतिविधियों को अपराध घोषित करना शामिल है, जिसके लिए सभी धार्मिक सामग्री के लिए राज्य की मंजूरी की आवश्यकता होती है। साथ ही गोलोग में सात तिब्बती निजी स्कूलों को बंद कर दिया गया है। चीनी सरकार को इन आठ लोगों को तुरंत रिहा करना चाहिए और उनके ठिकाने और कुशलक्षेम के बारे में जानकारी सार्वजनिक करनी चाहिए।

22 नवंबर, 2025

◆

२२. तिब्बती राजनीतिक कैदियों को जानें

नाम : सेपो

गिरफ्तारी की तारीख: 12 सितंबर 2023

स्थिति: बिना किसी सूचना के हिरासत में

आरोप: रजिस्ट्रेशन के बिना कालचक्र समारोह में शामिल होना

संक्षिप्त प्रोफाइल: चीनी अधिकारियों ने 12 सितंबर 2023 को एक तिब्बती व्यक्ति, सेपो को गैर-कानूनी तरीके से हिरासत में ले लिया। वह सातवें गुंगथांग रिनपोछे से धार्मिक कालचक्र दीक्षा लेने जा रहे थे। उसे त्रिदु काउंटी के एक रेस्तरां से गिरफ्तार किया गया। चीनी अधिकारियों, सुरक्षाकर्मियों और पुलिस ने उनसे उसकी मंजिल के बारे में पूछताछ की और उन्हें रजिस्ट्रेशन कराने का आदेश दिया। सेपो द्वारा कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य के रूप में विभिन्न सुरक्षा और प्रशासनिक पदों पर कई सालों तक सेवा करने के बावजूद, अधिकारियों ने उनसे कहा कि धार्मिक शिक्षा में शामिल होना गैर-कानूनी है और कानून का गंभीर उल्लंघन है। चीन के संविधान और अंतरराष्ट्रीय मानवाधिकार कानून द्वारा धार्मिक विश्वास की स्वतंत्रता की गारंटी के बावजूद, अब 60 साल से अधिक के हो चुके सेपो को पूजा-पाठ और धार्मिक समारोहों में भाग लेने के अपने अधिकार का प्रयोग करने के लिए गिरफ्तार किया गया। पीआरसी सरकार ने घोषणा की थी कि कालचक्र दीक्षा केवल स्थानीय निवासियों के लिए प्रतिबंधित है और अन्य क्षेत्रों के तिब्बतियों को धार्मिक सभा में शामिल होने से रोकने के लिए पूरे क्षेत्र में सुरक्षा चौकियां स्थापित की गई थीं।

केंद्रीय तिब्बती प्रशासन
सूचना एवं अंतरराष्ट्रीय संबंध विभाग
तिब्बत एडवोकेसी सेक्शन

29 नवंबर, 2025

IMPORTANT NOTICE

Dear Readers,

Firstly, I would like to express my heartfelt appreciation for the overwhelming response and support that we have received from you since the launch of Tibbat Desh Magazine.
Tibbat Desh Magazine is the only monthly Hindi Magazine on current affairs of Tibet which includes news on teachings of His Holiness the Dalai Lama, Current grave situations inside Tibet, Events & activities in Exile and of the Tibetan Freedom movement across the globe.
You must be aware, for the past 2 years, we have been receiving complaints about delay and not obtaining the Tibbat Desh magazine on time to our readers. And also we found that many of our readers either have shifted or changed their existing postal address. Therefore to review the mailing address, we request you to assist us in providing the current postal address at the below mentioned address or email.
We would also request our readers to send their feedbacks and suggestions about the magazine.

Yours Sincerely,

Tashi Dekyi
Coordinator
India Tibet Coordination Office

आवश्यक सूचना

प्रिय पाठकों,

सबसे पहले में, आप सभी का बहुत अमार व्यक्त करता हूं कि जब से तिब्बत देश मासिक पत्रिका का विमोचन हुआ आप लोगों का निरंतर समर्थन एवं शानदर भागीदारी रहा है।
तिब्बत देश, तिब्बत की पहली हिन्दी समाचार पत्रिका है, जो तिब्बत के भीतर हो रहे चीनी दमनकारी और क्रूर नीति तथा विश्व स्तर पर परमपावन दलाई लामा के मार्गदर्शन में तिब्बती आंदोलन के बारे में भारत के सरकार और लोगों में समर्थन एवं जानकारी उपलब्ध कराना है।
आप सभी को ज्ञात है कि, पिछले दो वर्षों से, हमारे पठकों का बहुत सारे शिकायतों हमारे इस कार्यलय में प्राप्त हुआ, जिनमें कई का यह कहना था कि उनको तिब्बत देश मिल नही रहा है। साथ ही हमें यह भी जानकारी मिली है कि बहुत सारे पठकों का पता एवं आवास बदल गया है या वहां से रवाना हो चुका है।
इसलिए हम इस पत्रिका का इस बार समीक्षा कर रहे है। और आप सभी से यह निवेदन करता हूं कि अगर आपको तिब्बत देश पत्रिका प्राप्त हो रहे है तो उसकी पुष्टी हमे तुरन्त देने की कष्ट करें। आप इसकी पुष्टी हमारे नीछे लिखे गये पता या ई–मेल पर भेज सकते है।
अतः तिब्बत देश पत्रिका के संदर्भ में अपना राय एवं सुझाव हमे समय समय पर भेजने की कष्ट करें।

सादर आपका

ताशी देकि
कार्यवाहक समन्वयक, भारत तिब्बत समन्वय केंद्र
नई दिल्ली

कार्यलय पताः भारत तिब्बत समन्वय केंद्र, एच–10, द्वितीय मंजील, लाजपत नगर–03, नई दिल्ली–110024
फोनः 011–29830578
ई–मेलः coordinator@indiatibet.net

सिक्योंग ने छात्रों को संबोधित किया

: तिब्बती छात्र ने भारत की प्रतिष्ठित राष्ट्रीय बाल विज्ञान प्रदर्शनी, 52वीं राष्ट्रीय बाल वैज्ञानिक प्रदर्शनी (RBVP) में गर्व से प्रतिनिधित्व किया।